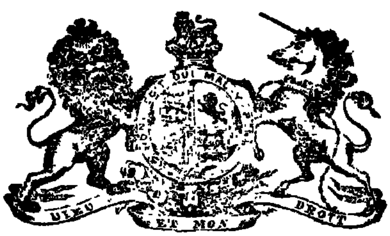
मनोजमंजरी ।

चतुर्थ कलिका ।

अर्थात्

नखसिख के अपूर्व कवित्तों का संग्रह ।

डुमरांवँ निवासी नकछेदी तिवारी उपनाम
अजान कवि द्वारा संग्रहीत ।



यह पुस्तक बनारस भारतजीवन प्रेस में मिलेगी ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुई ।

१८८६ ईस्वी ।

पहली बार १०००]   [मूल्य ।)

मनोजमञ्जरी।

मंगलाचरण सवैया।

छहरैं सिर पै छबि मोरपखा उनके नथ के मुकुता थहरैं। फहरैं पियरो पट बेनी इतै उनकी चुनरी के झबा झहरैं॥ रस रंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोउ रस ख्याल चहैं लहरैं। नित ऐसे सनेह सों राधिकास्याम हमारे हिये में सदा ठहरैं॥ १॥

चरण वर्णन—कवित्त।

काम के तुनीर बिबि पल्लव पटीर कैधों बिद्रुम के पीठ पर बारिज बरन हैं। जानु जुग नाल फूले सुन्दर सरोज दोउ अतिही सुदेस अहा मन के हरन हैं। उन्नत अंगूठा नख आभा अंगुरीन पर चन्दकला आई कैधों राहु के डरन हैं। छोंहूं हेर हारी रीझे रसिकबिहारी हंस-गति अनुसारी कैधों प्यारी के चरन हैं। २।

प्यारी के पगन पाई एती मृदुताई जामें सुगध बध-
दिन सांझ करि भाख्यो है। बाग ह्वै कढ़त ताके
सतान हूं के किसलय तारिबे को म-
चिन्तामनि आये जाके चांदनी बिछौना

मल को बिछौना जनु भाख्यो है। चरन धरत जाके आंगन फटिक चन्द मानो लाल बिद्रुम दलान बांधि राख्यो है॥ ३॥

कोमल अमलता की रंग भूमि कैधौं यह सोभियत आंगन कै सोभा कै सदन को। अरुन दलनि पर कीनो कै तरनि कोप जीत्यो कैधौं रजोगुन राजिव के गन को॥ पल पल प्रनय करत कैधौं केलोदास लागि रह्यो पूरबानुराग पिय मन को। एरी वृषभान की दुलारी तेरे पाय सोहैं जावक को रंग कै सोहाग सौतिजन को॥ ४॥

बिम्ब में प्रवाल में न ईंगुर गुलाल में न चंपक रसाल में न नैसुक निहारे में। दाड़िम प्रसून में न सून धरा तून में न इन्द्र की बधून में न गुंजा अधिकारे में॥ कुसुम सुरंग में न किसुक सुरंग मे न जावक मजीठ कंज पुंज वारि हारे में। राधा जू तिहारे पग अरुन समान ताको हेरि हारे कबिता न आवत हमारे में॥ ५॥

सवैया।

टेव गलीचा मोलायम ऊपर सूजनी चिक्कन चारु बिछावन। तापर पुंज पर्‍यो परसून को घूठनलौं गरकाप सोहावन॥ श्रीवृषभानकुमारि महा सुकुमारि चलै इस आवन। [illegible] डरै उमड़ै औ पड़ै कि गड़ै ना गुलाब की पांखुरी पावन॥ ६॥

पादांगुली बर्णन—कवित्त ।

अरुन कमल पग पांखुरी की पांति लसै सरस सघन सोभा मन के हरन की। दीरघ न लघुताई पातरी सो-भावती है देखे दुति छोत जात बिद्रुम बरन की ॥ नख की निकाई नीकी आरसी सी सोहति है जामे देखी जाति सोभा सौति के मरन की । भरमी सुकबि कहि आवति न मेरी मति पांगुरी भई है लखि आंगुरी चरन की ॥ ७ ॥

पद नख ।

गुरुजन हूं में राधि एक तक ताक करि प्रेम परिपाक के न कबहू डगी रहै । 'गुरुदत्त' भूपर उदोत जग मग जोति कबिता चकोरन की ओरन जगी रहै ॥ भूलि सुधि पलकी अनूप अंशुजालन मै रूपही के लालच मैं पुलक पगी रहै । तेरे पदनख शशिमण्डल मे बंक छबि सांवरे की नजर कलंक सी लगी रहै ॥ ८ ॥

बिछिया बर्णन ।

गोरी गोरी आंगुरीन ऊपर अनूप छबि देखिये दिनेस दुति तनक तनक की। बीच बीच बीजन के उठे हैं बलूला कैधौं रूप की नदी में रुचि राजति बनक की ॥ मोहनी सी सबै मनमोहन के मोहिबे को सूधे चितए तें सुधि

रहै ना सनक की । करत कलोलैं जब लाला संग डोलैं यह झनक मनक बोलैं बिछिया कनक की ॥ ९ ॥

सवैया ।

चंपकली दलहू तें भली पद अंगुली बालकी रूप रसे हैं। सोभ सुदेस लसैं नख यों जनु पीतम के दृग देव बसे हैं ॥ बांक अनौट बनी बिछियानि बिभूषित जोति जराय गसे हैं । केसव सांम सरोजन ऊपर कांपि मनो तन त्रान कसे हैं ॥ १० ॥

गुल्फ वर्णन कवित्त ।

चरन कमल करि हाटक की सोभा देत पूरी मनि मानो लट नागिनी उलफ की । रंभातरु उलट कपूर पूर राखिवे की कोठी सी जुगल कम कामके कुलफ की ॥ साजत सुदेश गांठ गिरी है दिनेस कैधौं रेसम रसे की रूप भूप के सुलफ की । एड़िन सौं पाड़ राजै पायन दुहूं बिराजै अति छबि छाजै लाल गोरी के गुलफ की ॥११॥

जेहरि वर्णन ।

कैधौं रति पति रची गति गजराज पै ये हेम की अँवारी समाधान सो बिचारि कै। कैधौं तनमंदिर में आभा चढ़िवे की सीढ़ी कीनी काम कारीगर कंचन सुढ़ारि कै॥ सूरति बनी है तेरे पगमे झमक सोभा कहां लौं बखानौं कहि जात ना उचारि कै। जेहरि सकल जगमोहन कहावत हैं तेहरि तो रीझि हेरी जेहरि निहार कै ॥ १२ ॥

कैधों रति रानी उर हार पीत फूलन को कैधों कदली कै अंग कंचन की बेलि है। कैधों कमला के गेह बांधी अति सोभित है पीतमति तोरन उठत छबि रेल है॥ सूरति सुकबि छबि कहा लों बखानों नेक देखत हियेरी मन सबको सकेल है। तेरे पाय पर ये न पायजेब आली कैधों गति गजराज गरै हेम की हमेल है॥१३॥

जंघ वर्णन।

कोमल अमलमुखी तेरे ये जुगल जानु मेरे बलबीर जू के मनको हरत हैं। सौरभ सुहाय सुभरंभा को सदन अरु केसव करभहू की सोभा निदरत हैं॥ कोटि रतिराज सिरताज ब्रजराज को सों देखि २ गजराज लाजनि मरत हैं। मोच २ मद रुचि सकल सकोच सोच सुधि आए सुंडन की कुंडली करत हैं॥ १४॥

मोहन के मन अवलंब यह आली लखि चित्र में लिखे न जात चकित चितेरे हैं। कंचन के खंभन के दंभ दूर करिबे को कीने करतार ऐसे कहूं काहुं हेरे हैं॥ रूपही की ईंडुरी है पींडुरी दिनेस जामें लघु न बिसाल लाल चाहि भए चेरे हैं। सूख गई सौति सब सोचन सकोचन तें सोच मदमोचन जुगल जानु तेरे हैं॥ १५॥

रतिहू की मति पतिहू की ललचात अति मैनहू के नैन देखि लालच भरति है। सुन्दर सरस रस सुभ सौरभ

सहज सोहै करवास जानि करो कर निदरति है । सुभित सुभग कोऊ चोप घनकार तेरे जघन जुगल मनि कठ भी हरति है । भाय कै उतारी कैधों सोभा साँचे ढारी छबि कनक के कदली की बदली परति है ॥ १६ ॥

रूप रस आसन के काम के सिंघासन हैं बेलिकला कौतुक की जीत मन आनिये ॥ सौतिन की गरब गयो है देखि २ जिन्हे कदली के खंभ दोऊ उलटे प्रमानिये ॥ भरमी सुकबि गज सुंड सकुचन लागे सौगुनी करभह्न तें सोभा सरसानिये । सुघर सुढार ये संवारी हैं बिरंचि कैधों जंघ अलबेली के अनूप जुग जानिये ॥ १७ ॥

नितम्ब वर्णन ।

अंगनि मैं कैधों जंघ अजब अनंग रचे गांठ कुचगिर छित हेत मद चालके । कटि रथ चक्र की अकृति मैं सु पाइबत केलि कला बैठक ये रसिक रसाल के ॥ बिपरीत मंडित जघन खंभ निम्ब कैधों लाड की गिरद गादी मैन महिपाल के । अमृत सों सानी कैधों सोने की सरस पिंडी सोहत हैं सुन्दर सुभग श्रोनी बाल के ॥ १८ ॥

लाले रंगवारे घेरवारे घाघरे सों घिरे नेक न उघारे भारे सुखमा चमू लहै । जगजीत वारे पति प्रीति रीति वारे कैधों काम के नगारे उलटारे झपे झूल हैं ॥ उपमा

अतूल पाय छांड़ि मति भूल बैन मनसा कहै तें करै कबिन कबूल हैं। निरखे नितम्ब मीके वा नितम्बिनी के मानो जंघ जुग कदली के थंभ थूल मूल हैं ॥ १८ ॥

चहूंओर चित चोर चाक चक्र चक्रमनि सुन्दर सुदरसन दरसन छीने हैं। दति सुख सुखनि घटायवेको सुख रूख सुरनि बढ़ायवेको केसव प्रवीने हैं॥ सबही के मननि हरनि करि हरिहू के मन मथिवे को मनमथ हाथ लीने हैं। रुचि सुचि सकुचि सकेलि कै तरुनि तेरे काह्न नए चतुर नितम्ब चक्र कीने हैं ॥ २० ॥

कटि वर्णन ।

तारसो तपासो बार लौंक सो लुकंजन सो जादू कैसो छंद कहिबे में छलियत है। चितै ना परत चौंकि जात है चितौन जहां नैनन को गति को गुमान दलियत है ॥ पगन धरत धरकत हियो बलभद्र डगन धरत डग डग हलियत है। कुच कुचंभार चीर हीरन के भारी भार ऐसे खीने लौंक पै निसांक चलियत है ॥ २१ ॥

सुमन में बास जैसे सुमन में आवे कैसे नाहीं काहू होत नाहीं हां कहे चहत है। सुरसरि सूर जामें सरस्वति सोहै जैसे वेद के बचन बांचे सांचे उचरत है॥ परिवा के इन्दु की कला ज्यों बसै अम्बरमें परवाको अच्छ परतच्छ ना लहत है। जैसे अनुमान के प्रमान पर ब्रह्म जैसे कामिनी कटि कबि मीरन कहत है ॥ २२ ॥

कोउ कहै बार सी सेवार सी कहत कोउ कोउ कं-
अतार सी बतावत निसंक है। मेरे जान सिरिफ लोनाई
की लपेट लागी ताही की लहम औ लचक होत बंक
है। तोखनिधि जो पै बेसधार को वहम बाढ़े तौ पै
परतच्छ को प्रमान कौन रंक है। जैसे भूमि अंबर के
मध्य में न खंभ कोउ तैसे लोललोचनी के अंक में न
लंक है॥ २३॥

दोहा।

सुनियत कटि सुच्छम निपट निकट न देखत नैन।
देह भये यों जानिये ज्यों रसना में बैन॥ २४॥
सुच्छम कटि वा बाल की कहौं कवन परकार।
जाके ओर चितौतहीं परत दृगन में बार॥ २५॥

किंकिणी वर्णन—कवित्त।

कैधौं क्षुद्र घंटिका रतन की ललित संभु राजत झ-
लझलात राधिका के धर पर। घाघरी मढ़ी के पर किं-
किनी कनक की कलस तर लसै कैधौं रूप रूप घर पर॥
चलत हलत कैधौं पौन ते झुलत तातें बोल २ उचिती हैं
आय आप घर पर। पींजरे जराउ टगीं बुलबुल जल
मानो झरलाय राखी है निकट नाभी सर पर॥ २५॥
रागन की मंडली रची है कामदेव कैधौं रागिनी
समेत रचना है चित चोरी की। कैधौं नाभी कूप पै र-

रूट भरी रूप भरी ठरी मनहरी है बिचित्र भांति भोरी की ॥ कैधों है दिनेस मनिबेस कोऊ मोहनी को मोहन को मोहे मन बैस धुनि थोरी की । कैधों बर बाजत बिराजत नितम्ब ढिग छाजति छबीली छुद्रघंटिका किसोरी की ॥ २६ ॥

नाभि वर्णन ।

सुख की नदी में कैधों परत गंभीर भौंर धरा को तखत पिय लोचन भरथ की । कैधों बरखा में रोम राजी रहै पन्नग की कैधों खानि खुली है जवाहिर के गथ की ॥ घासीराम कैधों सौति सुखन की भाकसीसी मान मई खिरकी उरज गढ़ पथ की । एरी मेरी बीर तेरी नाभी रसभरी कैधों दोत करता की कै मथानी मनमथ की ॥२७॥

राजत गंभीर रोमराजी बन तीर मन तीर पहुंचे तें भूले त्रिबली डगर मे । भूर भौर भारी छबि छलक सिंगार पानी कालिदास देखत भंवर कौन भरमें ॥ जबी नेकही में डूबि गई लरिकाई तामे रही ये उपाय सखी बाहिर नगर में । चंचल गोपाल खेलै गोकुल की गली बीच बड़ी करवर तेरे नाभी सरवर में ॥ २८ ॥

रोमराजी वर्णन ।

कैधों यह पान पै बसीकर को मंत्र लिख्यो देखि छबि मोहै कोऊ बिया पंचसर की । हृदय सरोवर सिंगार

जल भयो कैधौं उमड़ि चल्यो है नाभि कुंडिका गह्वर की। छोटे २ आखरन अवला लिखाए एतो आपनी सबलताई सूरत समर की। जिन्हें देखे नैनन की गति मति भाजी यह तेरी रोमराजी कैधौं बाजी बाजीगर की ॥२९॥

जोवन सरोवर में अलक झलका कैधौं नेह नवबेली नाभि कूपतें बिराजो है। खंजन नयन छवि बांधिवे की बही कैधौं राजत सुदेस महावाकी छवि छाजी है॥ उदर अभूत निकसत स्याम सूत भृङ्ग मत्ता अभिराम काम कीनी किधौं बाजी है। राखी अवरेख हिये मोहनी दिनेस देखि रोम २ राजी तातें नाम रोमराजी है॥३०॥

त्रिवली वर्णन।

कैधौं मैन भूपति के रथ के सुचक्र चले तिनहीं की लीकैं उर भूपे जान तौन है। कैधौं मन ठग की ये गली है भली ठगवे की कैधौं रुप नदी है तिधारा किधौं गौन है॥ ऐसी छवि देखि एरी मोहि मनमोहन जू तातें मैंहूं जानी येई मोहिवे को भौन है। एक बली सबही को बस करि राखत है त्रिबली जो करै बस अचरज कौन है॥३१॥

अमल अनंग के अनन्द की उदित भूमि जीति पिय बाजी दृगा बाजी सी पसारी है। कनक के पान से उदर में उदित दुति त्रिबली तिहारी मैं तिहारी मति हारी है॥ रूप गुन चातुरी सों सुरनर नागिन को जीतै

मनि कंठ बिधि सोहै रेखसारी है। सौति सुख उतरे को पिय प्रेम चढ़िबे को कुन्दन की प्यारी पैरकारी सी संवारी है॥ ३२॥

उदर वर्णन।

कोमल अमल दल कमल नवल कैधौं कीनी है बिरंचि मब छवि को सपेट है। उदित प्रकार की दुति आन छाई कैधौं चमकत चारु खात लोचन रपेट है॥ सुन्दर थली है भली मदन बिराजिबे को जाको सम कीने होत उपमा तपेट है। चीकने परम मखमल तें नरम ऐसो प्यारो जूको पेट लेत मनको लपेट है॥ ३३॥

कोमल बिमल काम भूप की सुरंग भूमि पान को सो दल चल दल कोसो पात है। मोहन के मन को मनोरथ की मोहनी के सौति के सताइबे को सोभा सरसात है॥ नाभि रस कूप की सुघाट मिलि सीढ़ी ढाली टरत न दीठ नीठ २ दरसात है। भरमी सुकवि रोम राजी की बिराजी छवि उदर अनूप ऐसो सुभग सोहात है॥ ३४॥

कुच वर्णन।

कैधौं रतिजंग के सुभट जुगराज सोहैं कंचुकी सुरंग कसे उन्नत प्रमाने हैं। दृग कमनैत के कटाच्छ सर छाड़िबे को मानो ये बिरंचि रचे रुचिर निसाने हैं॥ कैधौं

है कालिन्दी कूल कोक सुभ सोभ कीधौं उरज उतंग लखि कान्ह मन माने हैं। जोबन महीप अंग आगम सुगम जानि मदन फरास कैधौं तंबू जुग ताने हैं ॥ ३५ ॥

मंगल कलस भरे मकरन्द बलिभद्र कैधौं सम दुन्दुभी सहोदर समर के। कैधौं रहे संकि सरसुता के सरन सोचि चकवा के सावक मताए ससि कर के ॥ मैन के मवास मन मोहिबे को मोदक की श्रीफल विमल हैं कि फल सोभा तर के। चोपे बिन कामिनी पयोधर की आवै ओप ऐपन सो मांड़े आछे पिय घेरहर के ॥३६॥

कैसे रतिरानी के सिंधोरा कवि श्रीपति जू जैसे कलधौत के सरोरुह सवारे हैं। कैसे कलधौत के सरोरुह संवारे कहि जैसे रूप नट के बटा से छवि धारे हैं ॥ कैसे रूप नट के बटा से छवि धारे कहि जैसे काम भूपति के उलटे नगारे हैं। कैसे काम भूपति के उलटे नगारे भारे जैसे प्रानप्यारी ऊंचे उरज तिहारे हैं ॥३७॥

कुण्डलिया।

कैधौं कुच कंदुक किधौं कुम्भ कलस कमनीय। काम कंज कूजे किधौं कोक सोक समनीय ॥ कोक सोक समनीय छीर सुख श्रीफल कैसे। संपुट संभु सुमेरु हेम गुम्बज गोले से। औंधे ताल अछिद्र धरे विधि दुन्दुभि ऐधौं। बरने कवि रसरंग घोरहर माधो कैधौं। ३८ ॥

चलै न चल बल बुधि को लखि उर उरज उतान । ताजगंज मीनार को कीनो पस्त गुमान । कीनो पस्त गुमान मान को कौन चलावै । सैल शृङ्ग उत्तंग दंग ह्वै के रहि जावै ॥ खरे खंभ आकास सहारे कै है अचले । ऊंचे निरखि उरोजन अचले मुनि मन अचले ॥ ३९ ॥

कुच लालिमा वर्णन ।

सरद के घनमें ज्यों अरुन उदोत दुति सतोगुन माझ रूप राजस के छल कै । फटिक पखारन में सन्ध्या सी झलक रही सुरसरि माह सोभा सारद के जल कै ॥ झीनी सेत कंचुकी में अरुन उरोज आभा जाहि देखि मुखी मन लालन को ललकै । कैधौं हास अम्बर अनूप अनुराग राजै कैधौं सेत सारी में कुसुंभ रंग झलकै ॥ ४० ॥

कैधौं उदयाचल उदोत राका जोबन को अस्ता अस्त कैधौं सिसुताई भानुगति है । अंतर को राग किधौं बाहर प्रगट भयो कैधौं मुख राग की झलक झलकति है ॥ कैधौं चंद चंदन की चंदन गयन्द कुंभ कैधौं उभै भाल राजे सिवकी सकति है । कैधौं बलभद्र जामी मूरि है सजीवन की ऐसी कुच अग्रता की लालिमा लसति है ॥ ४१ ॥

कुच स्यामता वर्णन ।

संकर के मुख में हलाहल की डरी मानो करि कुंभ मधु हेत भौंर लपटानो है । सोने के घटा में स्याम मनि

की जरी है मानो जोबन मुकज पै सिंगार कैसो थानो है। नील कौल पांखुरी को रंचक सुभग भाग सुख चकवान के सनेह करि भानो है। तेरे कुच अग्र ऐसी स्यामता लसति नीकी सिखर सुमेर पयमन को निसानो है॥४२॥

अवलंब अलिन मलिनहीं के कोरिका की अमी कुंभ ऊपर अनंग छाप दीनो है। कैधौं सितकंठ कंठ राजति गरल दुति कनक गिरिन मनि मंजरी नवीनो है॥ सिसुता की तनुता तनक तन धरि मन तामस की रीति तें तरुनि तेज कीनो है। स्यामा के अनूप कुच अग्र की स्यामताई कैधौं बलभद्र रसराज छबि छीनो है॥ ४३॥

कैधौं हेम सैल शृंग जुग पै सिमिटि र.जे घन की घटा पाय पटली सुरोज की। कैधौं पोखराज के सोहाग के सिंधोरे नग नीलम जटित सोभा अति चितचोज की॥ श्रीकबि धौं मंजुल मलिन्द मत्त सोए आन पलिका बिछाय मृदु कलिका सरोज की। हीरघ हगी के उच्च कुच पै चुचुक कैधौं कैधौं सुधाकुम्भ मुख मोहर मनोज की॥४४॥

कैधौं गिरिराज के सोहाये बिबिशृंग कैधौं सुधा के कलस भरे कंचन के रंग के। कैधौं संभुराज फूले श्रीफल ललित कैधौं ऐंठे मद गलित सिपाही रति अंग के॥ कैधौं प्यारी कुचन पै स्यामता लसत कैधौं मरकत मनि के कलस ऊंचे सृंग के। कैधौं कंज मंजु पै मधुप आय अरे कैधौं सर मार गड़े भटू खटू ह्वै अनंग के॥ ४५॥

कंचुकीयुत कुच वर्णन ।

कैधौं सिसुताई के पयाने सामियाने ताने सुन्दर सु-
धार पट कुटिका है लाज की । कोकसाला रूप की कि
काम ही की सुखसाला बलभद्र कोमल कुलह बाज
काम की । मोहनी की डारी है अंध्यारी मनमथ मानो
ऐसिही बिराजैं धौं जोबन गजराज की । गोरे २ गोल
कुच तेरे नील कंचुकी में पहिरे सिलह रति रन के स-
माज की ॥ ४६ ॥

कोऊ कहै लालन तें कंचुकी में कुच मूदे कोऊ कहै
बांधि राखे बहा है मलय के । कोऊ कहै कुंभिन के कुंभ
पै अंध्यारी डारी संभुराज भारी जे अवधि हैं बलय के ॥
कंचन के संपुटन मूदे हर कहै कोऊ पहिरे सिलाह कैधौं
भट है दलय के । जैसे शिव तीजो भाल नैन राख्यो मेरे
जान तैसे काम मूदे बिबि लोचन प्रलय के ॥ ४७ ॥

आई जल केलि कै नवेली रति रंग भरी अंग २
भूखन अनंग रंग रस तें । कहत किसोर मुख धोय पोंछि
आंचर सों ठाढ़ी भई तीर पै छबीली उर जस तें । भुज
उलटाय कै कँधा पर है आंगीबंद गहि रहि गई देखि
लाल लाज बस तें । सनमुख सबल बिलोकि रनधीर
मानो खैंचत सुभट बीर तीर तरकस तें । ४८ ।

प्यारी सुकुमारी ताके उरज बढ़त चावें सुख सरसावें सुकुमार अबअत्ता के। कंचुकी कसत तैसी सुखमा कसत तातें कहै कवि तोष घनस्याम मनरत्ता के। नीके हैं बरोक बड़े बाढ़क सरोरुह तन पतिही कठोर हैं बंधैया काम कत्ता के। सिसुता गनीम के निकारिबे को काज आए टोपीदार एलची सुजोबन चकत्ता के। ४९।

सिसकत सांसे भरै बीधे बांह पासे भरै रस भरै र-सिक रसीली चित चोज की। कहै पद्माकर सु दोख बिपरीत मांह महमही मोजे मंजु मंजुल मनोज की। रंग रस भीनो झीनी कंचुकी सबुज फोरि निकरि लसी है पनी जुगल उरोज की। मानो रूप सागर में उमगत अनोखी स्वच्छ पाई कढ़ि काई फोरि कलिका सरोज की।

दोहा।

नील कंचुकी में लसत यों तिय कुच की छांह।
मानो केसर रँग भरे मरकत सीसी मांह ॥ ५१ ॥
बिधुबदनी तुव कुचन की पाय कनक सी जोति।
रँगी सुरंगी कंचुकी नारंगी सी होति ॥ ५२ ॥
जाली अंगिया बीच यों चमक कुचन की होति।
झिझिया के तुब्बन लसे ज्यों दीपक की जोति ॥ ५३ ॥

भुज वर्णन—कवित्त।

केसोदास गोरे गोरे गोल काम सूल हर भामिनी के भुज मूल भाव से उतारे हैं। सोभा सुख बरसत माखन

से परसत दरसत कंचन से कठिन सुधारे हैं । बलयब· लित बाहु देखि रीझे हरि ताइ मानो मन पासिबे को पासी यों बिचारे हैं । मलिन मृनाल मुख पंक में दुराए दुख देखो जाय क्रातिन में छेद करि डारे हैं। ५४ ॥

तन तरुवर की उभय सारवा बलिभद्र सुन्दर सुढार अति गोल समतूल हैं। सांचे भरि ढारे बिधि दामिनी के दोउ टूक दमकत दुति नाहीं दुरत दुकूल हैं ॥ सुख के सरोवर के पोखे हैं मृनाल मानो फूले कर अग्र कोकनद कैसे फूल हैं। काम कुन्द हेरे आय कुन्दन कनक दंड कैधों भोरी भामिनी के गोरे भुजमूल हैं॥ ५५ ॥

कर वर्णन ।

पावे जो परस ताको होत है सरस भाग पावन द· रस जाको जानो अनुसार है। रमनीय लेखन की लीला धर पेखन की ललित सुरेखन की प्रगटी पसार है। बहि क्रम बूढ़ी करि चिन्ता चित गूढ़ी करि रचनाऊँ ढूंढ़ी बिधि बिबिध बिचार है । कथन कथेरी लोक चौदहो मथेरी पर तेरी या हथेरी की न पाई अनुहार है॥ ५६ ॥

नूतह के नूतन सरस सुकुमार पात जात हैं लजात जे वे निपट उपर के । को सम की को सम कारत किस लय कहा होत ना बराबरी नवीन पात बर के ॥ कहै संभुराज दूजो सम को न देख्यो और पेखि २ रेखा

सुललित प्यारी कर के। जावक सरस विधि पारसी ह-रफ लिखे कंज के दलन में प्रबंध पंचसर के ॥ ५७ ॥

लाल करतल कर गहि कै नवेली के सु टेलति सहेली कोऊ परम सयानी है। कालिदास कौन सकै सुजस ब-खानि कर इन्दिरा की खानि सुतो हम पहचानी है ॥ पति को न गेह लिख्यो स्याम सो सनेह सुनि सखी के बचन बिधुमुखी मुसुकानी है। एरी ठकुराइन सुतेरी या हथेरी बीच सौति चेरी लिखी सब रेखन तें जानी है ॥

देखि मन देखे हरि तजत न अंक तेरो विमल मयंक-मुखी मोहै कोटि निरलों। कालिदास रीझ २ करत सराह प्यारो क्यों न यह छबि लागी बैरिन को विख लौं॥ लाल कुरबिन्द अरबिन्द इन्द्रबधू वारों बिद्रुम ललाई नीचे करि राखी इख लौं। तेरे करनख की बनक को बिलोकि उठै सौतिन को मनख की आग नख सिख लौं॥

ओज करि आपनो पयोज पृथिवी पै रोज रोज ही सरोजन को ओज हरिबो करै। बारि निधि बसि कै क-पाली सीस लसि कै प्रदछिना सुमेर आस पास भरिबो करै। छोटो २ ह्वै कै बढ़ै षोड़स कला लौं फेरि नीके बुन्द अमल अमीके झरिबो करै। वृन्दावन चन्द नख चन्द समता के हेत मन्द यह चन्द कोटि छन्द करिबो करै ॥

पीठ वर्णन ।

कैधौं यह बेस भेस रस को नरेस वाके देस की सु-
देस भूमि सोभा रस भीनी है। कैधौं यह मदन की पाटी
मंत्र पढ़िबे की सूरति सुकवि बनी हाटक नवीनी है ।
जोबन के मन्दिर की भीति है सुढार कैधौं राज रति राज
रुचि सो बनाय कीनी है। एरी बीर तेरी यह पीठ नेक
डीठ परी देखतहीं ईठ सबही को पीठ दीनी है। ६१ ।

जोबन महीपति के सेवक मदन तोहि तिय तन ब-
सिबे को जगह बनाई है। चिन्तामनि जानत सो नन्द
के कुमार जातें भई अंग अंग में अनंग की दोहाई है ॥
रूप की सँवारी चारु राधिका की पीठ पर तातें बेनी
बर बरनावली लिखाई है । दुहूं ओर वाके ढिग पारस
रहत तातें मेरे जान सोने की सोहाई दरसाई है ॥६२॥

सांचे तें निकारी भरि प्यारी की ललित पीठ नीठ
विध ईठ की सुधार कर गढ़ी है । कैधौं तोख पुरट की
पाटी है अनूप जामें परम प्रबीनताई पंचबान पढ़ी है ॥
तैसी छबि बरनी न जात मुख करनी के हरनी नयन
पर जेती छबि बढ़ी है । तैसी सुख देनी बेनी भली है
बली सनेह मानो नाग लली कदली के दल चढ़ी है॥६३॥

दोहा ।

इक तरु दुइ दल होत हैं यह अचरज की बात ।
दुइ तरु कदली जंघ में पीठ एकही पात ॥ ६४ ॥

ओरि रूप सुबरन रची बिधि रचि पचि तुव पीठ।
कीन्हीं रखवारी तहां बेनी ब्याली ढीठ। ६५॥
नहीं पनारी पीठ तुव कीन्ही ढीठ बिचार।
धसक गई यह भारतें बेनी के सुकुमार। ६६॥

ग्रीवा वर्णन।

मुख को सदन देखि मदन मुदित होत बारिज बरन सुभनाल सो बिसेखिये। चारो रीति नवो रस हाव भाव की प्रतीत छबिसों लपेटि हेम पिंडी कै उरेखिये। कैधों मनि कंठ तीन लोक की तरुनि जीत दुति तेही भांति २ तीनों रेख लेखिये। कनक के कंबु कमनीय ताके भव्य भेटे आनंद की सींव कै अमोल ग्रीव देखिये। ६७।

सुंदर सुडौल आछी भांति सों सुधारि करी हरिकर कंबु सोभा वारि फेरि डारिये। कोकिल औ पारावत कहि न सकत सरि जग में न और उपमान सो बिचारिये॥ सोभा कीसी सींव नूर कहि बरनत भेव रातो दिन पीतम रहत चित धारिये। जामें कंठ मध्य पीक दुति ऐसी सोहियत जैसे सीसी माह रंग जावक को ढारिये। ६८॥

तेरे मुख गावत गुपाल जू के गुन गन सारदाहू हरति है उर में उरेखिये। जिनके बे मंडन फटिक मालहार हास हिये परतेई वे सिंगार करि लेखिये। तेरे मेक बोल सातो सुर को सोहाग कोऊ मीठे राग सुनि रीझ२

करि तेखिवे । तोहि कारी तीनौं तांति मेरे जानवीन की तें प्यारी तेरे गरमै वे तीनौं रेख रेखिये । ७६ ।

सुरनर प्राकृत कवित्त रीत भारभटी सात्विकी सुभा- रती की भारती यौं भोरी की । कैधौं वैसो दास कलगा- मता सुजानता निसंकता सौं वचन विचित्रता की सोरी की । बीना वेनु पिक सुर सोभाकी निरेख रुचि मन वच क्रमन कि पिय मन चोरी की । चच्चुसारै कीसौं मोहै चक्रिकाक देखि २ चम्मुल नयन कंबु ग्रीव गोल गोरी की । ७० ।

सवैया ।

किधौं रूप सरोवर में तें कढ्यो लसै कंबु भयो सुर सात को है । किधौं सांवरे जू गुन रावरे के या कपोत फंध्यो बढ़ी जात को है । सुमिरेस जू कैधौं सुकोकिला को सुर साधि भयो विधि घात को है । वर कंठ में गोरी के कंठा लसै सु कतारन तारन कांत को है । ७१ ।

चिबुक वर्णन ।

कनक वरन कोकनद के बरन चौर झलकत झांईं तामे बसन रदन की । कीनी चतुरानन चतुर ऐसी रचि पचि चलप सी चौकी चारु चासन मदन की । अंगुल से वान उपमान की अवधि सब सुमिल सुधाम मानो पिय के सदन की । सुन्दर सुढार है चिबुक नव नायिका की मानो बलभद्र बादसाही है बदन की । ७२ ॥

कैधौं अरबिन्द मकरन्द रस पान माते ढिग अलि-पार रहै कैधौं अरसाय कै । कैधौं पिय प्रेम को पिजाय भरी नारंगी मैं बैंदी स्याम सुमन निसानै सी बनाय कै॥ कैधौं है सिंगार रस मगन मनोज मन लालच ललक मनि कंठ लाग्यो आय कै । सौतिन के बिरह सोहाग सोहै गोदना के लेत चित चारु तेरो चिबुक चोराय कै ॥

चिबुक तिल वर्णन ।

कंचन के खाने मैं जटित नीलमनि कैधौं संपुट मैं सुच्छद सरूप स्याम लोना है। सुमुख सुखेत रस बीज बोई छोना कैधौं केलि समै काम जू को खुलत खिलौना है॥ राम कहै तिय मन मोहन के मोहिबे को कठिन कुहू मैं पढ़ि राख्यो ठीक टोना है। कमल कली पै आहि बैठ्यो अलि छौना किधौं कामिनी तिहारे चारु चिबुक दि-ठौना है ॥ ७४ ॥

सोभन सिंगार रस की सी छीट सोहै फौंक काम सर की सी कहो शुगतनि जोरि जोरि । राहु कैसो र-हन रह्यो है सुभि चन्द्र माहिं तमी को सोहाग किधौं हारो हन तोरि तोरि । चतुर बिहारी जू के चित सो चिहुटि रह्यो चितये तें केसोदास लेत चित चोरि चोरि । तनक चिबुक तिल तेरे पर मेरी सखी वारौं हारि तरुनी तिलोत्तमा सी कोरि कोरि । ७५ ॥

सवैया ।

काहू कली की गुलाब कली पर भौंर को चेटुवा आनि धस्यो है । सोन लता पै अबाविरी मैन मनो नग नीलम चारु जस्यो है ॥ प्यारी के ठोढ़ी विराजि रह्यो तिल देखि विचार यहै मैं कस्यो है । भौंहें बनावत मानो विरंचि के लेखनी तें मसि बिन्दु भस्यो है । ७६ ॥

आरसी अंकुर नोक सिंगार सी बीच रही परकार निसानी । कै बिरहीन के हाय को दाग धरै बरु नील-कनी अनुमानी ॥ बीज के कुन्द में है छल छन्द कलिन्दजा बुन्द लसै दरसानी । नेह भई तिल ठोढ़ी के गाड़ में पेरि दई मनो प्रेम की बानी ॥ ७७ ॥

प्यारी के ठोढ़ी को बिन्दु दिनेस किधौं बिसराय गोबिन्द के जी को । चारु चुभ्यो कनिका मनिनील को कैधौं जमाव जम्यो रजनी को ॥ कैधौं अनंग सिंगार को रंग लिख्यो बर मंत्र बसीकर पी को । फूले सरोज में भौंरो बसी किधौं फूल ससी में लग्यो अरसी को ॥ ७८ ॥

दोहा ।

गोरे मुख पै तिल लसत मैं जान्यौं यह हेत ।
रूप खजाने को मनो हबसी चौकी देत ॥ ७९ ॥
चिबुक कूप रसरी अलक तिल सुचरस दृग बैल ।
बारी बयि सिंगार की सींचत मनमथ छैल ॥ ८० ॥

अधर वर्णन ।

अमल अबन अरविन्द बिम्ब आभा देत सहज सुबास रीझै माधुरी अमर है । सौति को तिवारी पिय अति मतवारी होत पूजै तब बारी सो संवारी सोभा धर है । मनिवांठ सुच्छम सुरेख है बँधूक फूल बसनी के चिन्ह पिय लोचन डगर हैं । कैधों लीक सी सुगति होनै विधु लोक बाला सुन्दरी सुलोचनी के सोभित अधर हैं । ८१ ॥

जाकी मधुराई लै सुधाई सुरलोक रुपी जब को छिप्यो है री पिजष अधरनि में । देखतहीं विद्रुम भये हैं जड़ रूप अब बिम्ब मतिहीन भये जिनके हरनि में । पान अंग पातरो भयो है तबही तें पेखि एरी ब्रजनारी अब रहैं को सरनि में । सूरति सुक तिन्हैं सके को बरनि प्यारी तेरे अधरन की न उपमा धरनि में । ८२ ।

दोहा ।

विद्रुम चहत रसलीन जब तुव अधरन की बान ।
लेखनि की विधि जीभ बंधि मधुराई तें जात ॥ ८३ ॥
जो भा अधरन तरुनि के सोभा धरत न कोय ।
याही बिधि इनको पर्यो नाम अधर बिधि जोय । ८४ ।
तेस दुतिया दुहुन मिलि एक रूप निज ठानि ।
ओर सांझ गहि चहनई भये अधर तुव आनि । ८५ ।
लाल बाल के अधर छवि लाल बान जनि पाल ।
लाल बाल सुनि स्तुति सुकृत करत बात में लाल । ८६ ।

दसन वर्णन ।

सुच्छम सुबेष सुधी सुमन बतीसी मानी लच्छन ब-तीसहु की मूरति बिसेखिये । राती है रतीक छबि सेत सब कैधों ससि मण्डल में सुरन की सभा अवरेखिये ॥ कैधों पिय जुगति अखडता के खंडिवे को खंडन के केसव तरक कुल लेखिये । दीनी दूनी कला विधि तेरे मुखचन्द को सुन्यायही अकासचन्द मन्दद्युति देखिये ॥८७॥

कैधों सातो मंडल के मंडन मयक मध्य बीजुरी के बीज सुधा सींचि के उगाये हैं । कैधों अलबेली के चमेली की चमक चोक कैधों कीर कमल में दाड़िम दुराये हैं ॥ कैधों मुकुताहल महावर में राखे रंगि कैधों मनिमुकर में सुवर मोहाये हैं । केसोदास प्यारी के बदन में रदन छबि सोरह कला को काटि बत्तिस बनाये हैं ॥ ८८ ॥

कैधों मित्र मित्र में बसाई हैं किरनि तातें फूलोई रहत अनुमान यह आयो है । कैधों ससिमंडल में भांईं उड़ मंडल की कैधों हासरस निज नगर बसायो है ॥ दसन की पांति कुन्द कलिन की भांति आछी सोहति है कांति गुन कोविदन गायो है ॥ मानहुं विरंचि तेरी बानी को चतुर रानी दोलर के मोतिन को हार पहि-रायो है ॥ ८९ ॥

फूली फुलवारी रही उपमा न जात कही कहा धौं

सराहैं तातें जोति अधिकानी है । आलम कहत है री मोतिन की पांति खरी हीरन की कांति छबि देखि के लजानी है । दाड़िम दरकि गए इनके सम न भए रवि के किरन कैसी चमक बखानी है । तनिक हँसन में दसन ऐसे देखियत दीपत नछत्र मानो दामिनी दुरानी है ।८०।

कैधौं मुकताहल हैं कहल के आबदार जावक रंगाए अरबिन्द सुख भरे हैं । कैधौं लाल बिद्रुम अमोल मनि मानिक के दामन जवाहिरी छवा से खोलि धरे हैं । दाड़िम के बीच कैधौं सुधा में सिराए हंस सुन्दर सुधाकर के मंदिर में भरे हैं । राधे को बदन कैधौं काम के सदन माझ जड़िया मदन ले जवाहिर से जरे हैं । ८१ ।

कैधौं कुन्द कलिका की अवली अनूप रूप बानी की बिपंच की सुधार धरी सार है । ससि के सदन ससि सिसु आये प्रिय लाल कैधौं सुख बाढ़िब की बार बर अर है । झलकत रुचिर बतीस बक्ष बलभद्र चमकत चारु बिजुरी की अनुहार है । अमृत के कुण्डन पै अलि को बिमल मन कैधौं ये रदन चन्द बदन मझार है ।८२।

सवैया ।

को बरनै उपमा कबिरंग सुतोषी में है गुन जर बतीसे । जादिन तें दरसो मुसुकात सुकान्ह भये बस तेरे हँसीके । चन्द से आनन पै तिल राजत ऐसे बिराजत

हांत मिसी के। फूलन की फुलवारिन में मनो खेलत हैं लरिका हबसी के। ८३ ॥

बारिज में बिलसै अलिपांति किधौं अलि अच्छर मंच बसी के। मैन महीप सिंगारपुरी निज बांह बसाई है मध्य ससी के। आनद सो दरसी दसनावलि स्याम मिसी मिलि ऐसी लसी के। फूलन की फुलवारिन में मनो खेलत हैं लरिका हबसी के। ८२ ।

दोहा ।

मोल लेन को जगत जिय बिधि जौहरी प्रवीन ।
राखे बिद्रुम के डबा लै हिज मुकुत नवीन । ८४ ।
दसन झलक में अरुनता लखि आवत मन मांह ।
परी रदन पै आय के अधर रंग की छांह । ८५ ।
स्याम दसन अधरान मधि सोहत हैं इहि भांति ।
कमल बीच बैठी मनो अलि छौनन की पांति ।८६।

रसना वर्णन ।

गूढ़ गुन अर्थ के प्रकाश के करन हारी झूठ सांच कहै रीति सब के मनन की । नाद वेद भेद के उचारि देत आखरनि कोमल रसाल जात बसुधा के बस की। भरमी सुकवि प्रिय मन को हरनहारी सुधा सौं सुधारी जानी गान हारी जस की । रसना की उपमा न होत कोटि रसना तें मन की कसौटी के कसौटी पटरस की।

कमल बदन मांझ कमला के काज छबि राखी है कमल दल तलप संवारी है । कैधों बलभद्र खट तंबन की लेखी वहै कैधों घट खादन को परखनहारी है । ललित तमोर रंगगुन की कसौटी मानो मंचन की मूरि परमारथ की थारी है । रसिक रसीली प्यारी तेरी मृदु-रसना कै पदपद हरन की रसानंद कारी है । ९७ ।

बाणी वर्णन ।

सुधा के समुद्र की लहर सी कढ़त रहै याही को सुनाय लाल कीने तै अधीन है । बन उपबन बैठि आप को दुरावै याते मेरे जान यहै कलकंठी कंठ हीन है । बलदेव ऐसी ना रची है ना रचैगी बिधि मोतिन की उपमा करन लागी छीन है । कमल के कोष पैठि गुंजरत भौंरे कैधों बानी मांझ बानी जू बजायी आनि बीन है । ९८ ॥

सहज झरोखा मांझ बोलन रसीले तेरे सुधा कैसी धार धौराहर में धसति है । नीचे खरे सुनत प्रवीन लोग बीन जानि कहत गवैले यहां कोकिल बसति है । कालिदास मुखतें बरन मुकताहल से निसरत अबै रसरंग बरसति है । ऐरी मेरी रानी हरि जू के मन मोहिबे को नेह की निसानी तेरी बानी बिलसति है । ९९ ॥

जाके एक अंस हंसवाहिनी प्रसंसति है किन्नरी सु

कौन जाकी नाहीं सरि करिहै । और कोकिला सो कोकलाहू एक जाने नाहिं सूरति सुकवि गनती में कौन धरि है । बीना बेनु तबलो बजाय लीजै प्यारि लाल फेरि तुमै उनहूं की चरचा बिसरि है । सुधि बुधि सकल बिराय जैहै जानो यह जबै मेरी रानी जू की बानी कान परिहै ॥ १०० ॥

ऐसो नीको बोलिबो सिखायो सखी कौने याहि सीखबे को होत सरसुतीहू की मति है । कुबरी कुहुक सब हीतें सरकस पिक पक्यो करकस करकस हलरति है ॥ केकी कोक कलरव लागति बिकल रव अलि अलखोहैं धुनि सुनि भए अति है । एरी मेरी रानी रीझ मोहे दधिदानी तेरे बानी आगे बीना हूं कमीना सी लगति है ।

काम की दोहाई कि सोहाई सखी माधुरी कि इन्दिरा के मंदिर में झांई उपजत है । सुरन की सुरी कैधौं मोदहू की सोदरी कि चातुरी की मातु ऐसी नातन सजति है ॥ राग राजधानी अनुरागन की ठकुरानी मोहे दधिदानी केसो कोकिला लजति है । एरी मेरी ब्रजरानी तेरी बरबानी किधौं बानी हीं की बीन सुख मुख में बजति है ॥ १०२ ॥

मुखराग वर्णन ।

केसोदास राग रागिनीन को सुअंगराग कैधौं हिय

सेवत हैं संध्या भली भोर की। अधर रदन बहु रतन की खानि कैधौं तिनकी झलक छलकानि चहुंओर की। कैधौं रेखा भूखन के मनिन के चाक चहू ओर लेत चित्त चाव तेरे चितचोर की। लागि रह्यो अनुराग कैधौं पिय बैनन को कैधौं रुचि राची तेरे तरुनी तमोर की॥

कैधौं कमला के गेह कमल की लाल माल दिवाकर ताकी ताकी झलकत रंग है। कैधौं अनुराग रह्यो फैल बानी रानी जू को जब काहू काहू प्रति करत प्रसंग है। कैधौं आली तेरे लाल ओठन की लाली छाई मनभाई मेरे बनमाली जू के संग है। मोहन अनंग कैधौं सोभा को सुभग अंग कैधौं प्यारी तेरे मुख पानको सुरंग है॥

कैधौ अनुराग राग राजस को रूप निज कैधौं प्रान पंकज पराग द्विज न्हाए हैं। तन तरुनाई की अरुनता उदोत कैधौं श्री के गेह सिरीखंड कुसुम बिछाए हैं॥ सोभाही तें सोभियत देखि मन मोहियत तीनों लोक नारिन निरखि नैन नाए हैं। तिय तेरे कृष्ण तमोल रुचिराची कैधौं बलभद्र बानी को बसन पहिराये हैं १०५

मुखवास वर्णन।

कैधौं भयो उदित अनंग जू को अंग उर सुरभित अंग राग ढारैं देह सुखको। कैधौं चित चातुरी चमेली चारु

फूलि रही फैलते आस केसव प्रकास कर सुखको। कैधौं अविमल प्रेम पूरनावतंबन को कैधौं अस्वानरी बनमाली के अनुख को। कैधौं पाय प्रान पति हृदय कमल फूल्यो ताको गंध बंधु के सुगंध सुख मुख को। १०६ ॥

पूरि परिमल मलयाचल सरोजन को निज निरवारी है कमल पद्मपानि को। धुनि २ लपत है गंध फली नासिका को अधिक अमोद रद कुंद कलि कान को ॥ धूपते अनूप आवै बोलें ते बदन बास बलभद्र दई तें म-धुप सुख दानि को। सोंधे भीजी भारती सुबास से प्रवेद कन तेरो मुख दीपत सुगंधनि की खानि को ॥ १०७ ॥

याही मुख बास कमलनि की प्रतीत देत याही मुख बास केतकी सो मधुमत्त है। याही मुखवास वेलि मा-लती को मारै मान याही मुखवास कामी होत जन संत है। याही मुख बासन नवेली तन कैसी फूली याही मुख बास बकी सौहति अनत है। तेरे मुख बासही सौं सकल सुवास भयो बारहो महीना भौंर मानत बसंत है ॥१०८॥

दोहा।

अगर अतर के नगर में कहूं रही नहिं चाह।
नगर २ सब डगर में तुव मुख बास प्रवाह ॥१०९॥
नव मुकतन के झलक में भो मन लह्यो प्रकास।
करत नासवासी मुकुत पासु लिया मुखवास ॥११०॥

मुसक्यान वर्णन—कवित्त ।

गुल गुलकंद के सुमंद करि दाखन को देखौरी दुचंद कलाकंद की कमाई सी। कहै पदमाकर त्यों साहिबी सुधाकी सबै बृज वसुधा में तें कहा धों परी पाई सी॥ खरक खरी की मधुहू की माधुरी की सुभ सरदा सिरी की मिसरी की लूट ल्याई सी। सांवरी सलोनी के सलोने अधरान में सुमंद मुसकान भरी मंजुल मिठाई सी॥१११॥

रसना ललित कलवानी जूको आसन है दसन ल· सन कौन सकत बखानि है। कालिदास लाल अधरन पर वारों लाल लसत अमोल मृदु बोलन की बानि है॥ सुघर गोविन्द के रिझायवे को इन्दुमुखी रची एक रचना अनंग विधि आनि है। कैसी मुख माहँ खुली सुखमा की खानि जहां महामोह मई निरमई मुसकानि है॥११२॥

सिव सिर गंग जैसे जल की तरंग जैसे उड़गन अंग जैसे करत पयान है। मोतिन की माल जैसे दामिन की धार जैसे ओपी तरवार जैसे तजत मियान है॥ दीपक की माल जैसे पावक की ज्वाल जैसे मोहिवे को लाल मन निपट सयान है। तार जरजरी कैसे फूल झरझरी कैसे जुगनू ज्यों जरी तैसे तेरी मुसकान है॥११३॥

मदन महीपति की कैधों जय कीरति है कैधों पिय प्रेम तरु अंकुर की दीपिका। कैधों मुखचन्द्र चारु चंद्रिका

प्रकाशमान कैधौं रूप कुंडल के रसकी उसीचिका। कैधौं अति चारु सुधारस के सरोवर की जोबन समीर के परस मृदु वीचिका। भारती बेसन सुख दास बिलसन मुखराजै मंद हसन सु दसन मरीचिका ॥ ११४ ॥

हास वर्णन।

कोकनद कली जैसे खिलत बयारि लागै मंद मुसक्यान उसकान है चमेली की॥ आरसी में भानु के प्रकाश को उजास होत जैसे दीप माल दीपै दीपति हवेली की॥ भरमी सुकवि दुति दामिनि सी कौंधति है चांदनी सी चहूं ओर बातमें सहेली की। चंदकी चमक चकचौंधति दसन दुति पियमन बसन हसन अलबेली की॥ ११५॥

कोमल कमल कोस कमला बसन ताके भूखन की जोति कैधौं जगत प्रकासी है। कैधो चपला के चखचौंधनी को दयानिधि कीनी तुव नैनन जुगति अति खासी है॥ कैधौं मधि मोहिनी के मोहिबे को मोहमई चतुर विरंचि मई चातुरी निकासी है। काम की सुधासी चख चिखन की फांसी कैधौं एरी प्रानप्यारी या मधुर तुव हासी है॥ ११६॥

दोहा।

लखन कपट सौतिन गरब हाव कियो सब नास।
चंदहास सम भासई चंदमुखी को हास॥ ११७॥

दंत कथा या दसन की ओर कही नहिं जात।

फूल झरीसी छूटत अब हंसि २ बोलत बात ॥११८॥

कपोल वर्णन—कवित्त।

चपला के ऐसे चारु चमकै हैं कवि पुंज छेदि निसरत झीने घूंघट निचोल हैं। कालिदास आस पास तरल तरौनन की जोति किरनावली ललित अति लोल हैं। कान्ह अवलोकत वदन प्रतिबिम्बित कनक सरूप मानो मुकुर अमोल हैं। लेत मन मोल कहूँ दृगन की तोल ऐसे गोरे २ गोल बने प्यारी के कपोल हैं ॥ ११९ ॥

कैधौं नैन नटुआ कि नाचिवेकी रंग भूमि सोभा सुख आंगन अनंग अंग लोल हैं। कैधौं है अनंग अंग बेलि के विमद दोउ जैसे सुख देत दुति अमल अमोल हैं ॥ पिय मन मानके अखारे कैधौं मोलके उधारे जिन ऊपर मुकुर गोरे गोल हैं। कैधौं चोलमुखी मोद मंच तें कलित ओज भूषन फलित तेरे ललित कपोल हैं ॥ १२० ॥

केसर कपूर कंद कीन्हे दुतिमंद अति आनद के कंद होत चंदहूं तें अंग हैं। अमल कमल दलहू ते अति कोमल जे राजे बीच २ इन्दु गोप कैसे रंग हैं। प्रेम सों रहत नित पुलकित मुलकित झलकत छलकत छबिस्रुति संग है। गोरी तेरे लोल २ ललित कपोल तामे लाल सेत पीत बहुरंग के तरंग हैं ॥ १२१ ॥

कैधौं रूप धरती में राजत जुगल खंड कैधौं सीसकै-तन की चारसी सुढ़ारि हैं। कैधौं हरि लोचन तुरंगन के लीला थल कैधौं सरसीरुह के दल द्वै निहारे हैं। परसराम कोमल मधकन से चंपक से चारु चन्द्र चन्द्रमा को कोटि कै निकारे हैं। प्यारी गोल २ अति ललित कपोल तेरे नीर २ रचिकै विधाता कर भारे हैं। १२२।

कपोल तिल वर्णन।

बदन सरोरुह के संगहीं जनम जाको अंजन सुरंग सम जान परसत है। मढा रूखे मुनिन को मन चिकनाय जाय सेनापति पाई जब नेक दरसत है। रूप सरसावे औ रसिक मन भावे मीठो नेह उपजावे पै न चाप वि-लसत है। आली बनमाली मन फूलमें बसायो तेरे तिल है कपोल सों अमोल बिलसत है। १२३।

फूले वारिजात में लखात हैं मधुप कैधौं सुखमा स-रोवर में रसराज पैठो है। रतिके मुकुट पै धरी है नील मनि कैधौं कामनी के वदन परम छवि जैठो है। श्रीपति रसिकराज सुन्दर गुलाब बीच मृग मद बिन्दु रूप परम परैठो है। ललित कपोलन में तिल छवि देत मानो पू-रन मयंक में निसंक सनि बैठो है। १२४।

कैधौं रूपरासि में सिंगार रस अंकुरित अंकुरित

कैधों तम तड़ित जुन्हाई में। कहै पद्माकर किधौं यौं काम कारीगर मुकता कियो है हेम फरद सुहाई में। कैधो अरविन्द में अलिन्द सुत सोयो आनि कैधौं तिल सो हत कपोल की लुनाई में। कैधौं पर्यो इन्दु में कलिन्दी जल बिन्दु कैधौं गरक गोविन्दभयो गोरी की गोराई में।

कपोल गाड़ वर्णन।

भँवर परत जल जोबन के ओर कैधौं जामे छबि बहुत सकल प्रेम दान की। निकसि सके न बल कर हारे बलभद्र नैन नाग नाथिबे की थोरी विधि बानकी। उदित नवीन छीत रचित भरत मानो रूप को निवास कैधौं कूंड़ी सुख दान की। पिय मन पारद अटकिबे की गाड़ कैधौं गाड़ गंडमंडलनि मंद मुसकान की॥ १२६॥

श्रवण वर्णन।

पिय गुन आसन सरोज के सिंहासन हैं कैधौं बिबि बासन सनेह रस भरे हैं। सांच झूठ तौलिबे को तुला के पला हैं कैधौं किंसुक के पात से लपटि पाके परे हैं। कैधौं बिबि चक्र सब चक्र के सुधारे कैधौं कुंडल कलाकी निधि बिधि करि धरे हैं। बारन के छिद्र के अछिद्र छबि ताये कवि कंचन की सीप मानो मुकता सों गरे हैं॥१२७॥

जटित जराय जगमगत सहस कर बलिभद्र लष की कंवार काके भान है। भरत बिभार है अपार छत नैनन

के तीरचा अनंग बान रोप्यों खरसान है। उपमा अनंत मनरंजन बिलासो रती तांडव के तार जिन्हें जानत सुजान हैं। चंद रथ चरन की काम चक्रवे के चक्र कैधों तिय तरल तरौना तेरे कान हैं। १२८।

कैधों सुर पंडित असुर गुरु दोऊ छिपि ससि के श्रवन लागि मंत्र मतकात है। कैधौं कलपद्रुम के सुमन समेट आभा सुन्दर कपोल पर कला कतरात है। कैधौं रवि छील सुधाबुन्द दै जमाए कैधौं कवि के कमल कैधौं नवल सोहात है। कैधौं मनभावन की साखी लै करन राखी प्यारी के करनफूल कीनो मन मात है॥ १२९॥

कानन में कुन्दन के नगन जटित सोहै अंबर छपाए बहु तोल महा गथ के। कालिदास ललित कपोलन के जोग लसै कैसे बरनत घनश्याम सहु जथ के। पाछे परे राहु तातें छपे हैं कुरंग दृग अनूमान होत हिये अनुमान पथ के। छबि आई आननि में कानन तरौना वाके सोहत सोहाए मनो चाक चन्द रथ के॥ १३०॥

नासिका वर्णन।

कैसव सुगन्ध स्वास सिद्धन की गुफा कैधौं परम प्रसिद्ध सुभ सोभन सुबासिका। कैधौं मनमथ मन मीन की कुबेनी कैधौं कुन्दन की सींव सील सोधन बिलासिका। मुकुता मनिन की है मुकुतपुरी सी कोधौं कैधौं

सुर सेवत हैं जासी की प्रकाशिका । त्रिभुवन रूप ताको तुंग तोय निधि ताके तोय की तरंग कै तरुनि तेरी ना-सिका ॥ १३१ ॥

सोभा को सकेलि ऊँची बेलि बांधी बलभद्र राख्यो सम लोचन कुरंगन को रोस है । दीपति को दीप मुख दीप को सुमेर यह मृदु मुख सारस को सिफा कन्द कोस है ॥ कुसुम तरोवर की कलिका सुगंध फूली उपमा अनू-पम की बिबिध निसोस है । तिल को सुमन है के ना-सिका तरुनि तेरी सुरन की सरन कै सौरभ को कोस है॥

नासिका वेध वर्णन ।

सोभा सुख सदन को बातायन बलभद्र मानो महा मोहनी पपीलका को गेह है । मैन पंचवान को छबीलो छिद्र छाजत है देखिवे को देह में चदेह जू को देह है ॥ पिय मन रोकिवे को निडर किली को रंध्र सुखमा मधुर को रुचिर जासो नेह है । मैन के मवास में धनुर्धर को मोर चाहै कैधौं वाम नासिका में बेसर को बेह है १३३

सुनि चित चहै जाके कंकन की झनकार करत है सोई बात होत जो बिदेह की । सेख भनै आज है सु-काल्हि नाहीं कान्ह जैसी निकसी है राधे की निकाई कछू नेह की । फूल की री आभा सब सोभा लै सकेलि

धरी फूलि ऐसो लाल भूलि जैहो सुधि गेह की। कोटि कवि पचै तऊ बरनी बनै न फबि बेसर उतारै छवि बेसर के बेह की॥ १२४॥

नासिका भूषण वर्णन।

कोऊ कहै नाक हांसी कोऊ मनमथ फांसी कोऊ कहै देवमाया चक्र सो बनायो है। मुकुता अनूपलाल चूनी छवि रूप नथ कंचन को तार कैधौं सुघर गढ़ायो है। दीपजीत सुकजीत चंपक कली को जीत नासिका विजय जय कवि पै पढ़ायो है। सील को सुजस तीन लोक को सोहाग निज नेत मैं पिरोय मैन भूखन दिखायो है। १२५॥

कैधौं पिय नेह मनि कीरति हँसन कैके भूले हेम भूले भूले ध्यान समरथ के। कैधौं मीन मन खग फन्दा तामै मित्र बस बैठि कवि कुल सोम थापे मनमथ के॥ ऐसी भांति देखि एरी मोहे मनमोहन जू सूरति बखान करौं कहा लौं अकथ के। भूले ग्यान गथ के भौ लोक लाज पथ के सो कौन नैन न थके निहारे तेरे नथ के॥

नथ मोती वर्णन।

बदन सुराही मैं छबीली छबि छाको मद अधर पियाले छिन २ मैं गहत है। ललसाय पीढ़त कपोल पर

अंक पर कबहूं गजक आदि फलन चहत है । प्रेम मम साथी मतो सदा रहै अंक भरे कोई रहत कोउ काहू ना कहत है । भुकि परै बात के काहे में पनधारा प्यारो बेसर को मोती मतवारोई रहत है ॥ १२७ ॥

छाड्यो जल सागर विधायो तन आप आय अधर के बीच रह्यो और ना चहत है । विधि के संजोग बस आनि यर खोए सर बन्यो है बनाव मनि कंचन सहित है ॥ पूरब प्रताप चन्द पायो है मुखारबिन्द एतो कहा कहै कस जेतो तू लहत है । प्यारी के बदन पै मदन जू को मद पिये मोती मतवारो सदा भूमत रहत है ॥ १२८ ॥

लोचन वर्णन ।

पिय मन दूत कैधों प्रेम रथ मूल कैधों भँवर अभूत मनु प्राण को सुरंग है । चितवत चहूं ओर पीतम के चित चोर चन्द के चकोर किधौं केसव कुरंग है ॥ बात मद भंजन हैं खीजिवे को खंजन कि रंजन कुंवर कामदेव के तुरंग है । सोभा सर मीन मीन कुवल परस भीन मलिन मलीन किधौं नैन बहु रंग है ॥ १२९ ॥

दीरघ उदारे तहां कोरे रतनारे कजरारे तहां तारे अति भारे जे सुरंग हैं । कहै गुनि गंग जनु दूध की सो धोए पुनि कोए विकसत सित असित दुरंग हैं । पारद

बरस चार बिर से थिरकि आत तिर में चलत मानो कूदत कुरंग हैं। खेंचे ना रहत अनुराग हूं के बाग बर भामिनी के नैन कैधौं मैन के कुरंग हैं। १४०।

मृग कैसे मीन कैसे खंजन प्रवीन कैसे अंजन सहित सित असित असद से। चर से चकोर से कि चोखे खांड कोर से कि मदन मरोर से कि माते राते मद से। नवी कवि मैना से कि और नैना वैना से कि सी पढ़े सलोना मध्य राखे मृगमद से। पद्य से पयोध से कि और सोधे सोध से कि कारे भौंर कैसे अनियारे कोकनद से १४१

झूमत झुकत भरे मद के अरुन नैन मानो मैन तून है कढ़त जातें सर है। हाव किल किंचित सरूप धरे नाव कैधौं मोहन बसीकरन उचाट के अमर है॥ कैधौं मीन पैरत सुभाव के सरोवर में मानिक जटित भूमि खंजन सुढर है। कैधौं अनुराग को लपेटि के सिंगार बैठ्यो कैधौं कौल पाखुरी में डोलत भँवर है॥ १४२॥

मीन ह्वै कमीने परे पानी में निहारि हारि हारि के चकोर ते वे चुनत अंगारे हैं। भनत कविन्द अलि कंजन के खंजन के गंजन गरब गारि हारे ते निहारे हैं। डोरे रतनारे कारे तारे और सारे सेत उपमा सितासित तरंगन ते भारे हैं। प्यारी तेरे मान के दृगन पर साम वारे कैवर कसीसे ले कमान वारे वारे हैं। १४३।

पानिप के पानिप सुघरताई के सदन सोभा के समुद्र सावधान मान मौज के । लाजन के बोहित पुरोहित प्रमोदन के नेह के नकीब चक्रवर्ती चित चोज के ॥ दया के दिवान पतिब्रत के प्रधान जुग नैन ये मुबारक बिधान नव रोज के । सफरी के सिरताज मृगनके महाराज साहिब सरोज के मोसाहिब मनोज के ॥ १४४ ॥

पाटल नयन कोकनद कैसे दल दोज बलभद्र बासर उन नीदी देखी बाल मे । सोभा के समुद्र माझ आभा बड़वानल की देव धुनि भारती मिली है पुन्य काल मे ॥ काम कइ वर्त कैधौं नासिका उडुप बैठो खेलत सिकार तरुनीके रूप ताल में । लोचन सितासित में लोहित लकीर मानो बांधे जुग मीन लाल रेसम के जाल में ॥ १४५ ॥

कैधौं रूप सागर में आंच बड़वानल की बिरह बिसाल ज्वाल जा मधि बिकासी है । कैधौं दल पंकज के ऊपर अरुन रेखें कैधौं नेह दीपक की अरुन सिखासी है गोरी तेरे नैनन के बीच लाल देखें तेती रेखें अनुरागही की प्रगट प्रकासी है ॥ कैधौं पनियारे अति कारे बटपारे इन तारन की फांसी पिय जिय है निकासी है ॥१४६॥

हरिन निहार अकि रहे हिये हारि मानि बारिचर बारिज की बानक बिकासी है । हाती होति तिया प-

छतातो कर छाती दै दै घीर मनरंजन श्री खंजन जमाती है। ऐसे को समान उपमान पाय दृगन को कबिन के मन की उकति अधिकाती है। प्यारी के अनोखे अनियारे ईछनन छ्वै छ्वै तीछन कटाच्छन तें कटि २ जाती है॥ १४७॥

सिपर सुपूतरी अपान कल कज्जल त्यों दल बरुनीन के छबीले छैल छाजे हैं। कहै पद्माकर न जानी जाति कौन पैधौं भौंहन के धनुख चितौन सर साजे हैं। घेरदार घूघट घटा के छांहगीर तरे मदन वजीर के लियेई मंजु माजे हैं। बखत बुलन्द मुखचन्द के तखत पर चारु चख चंचल चकत्ता ह्वै बिराजे हैं॥ १४८॥

भारे कजरारे दोऊ काजर से लाल डोरे सेंदुर सों चीते अति राजत सुपथ के। मान कवि कहै पाय बरुनी अजीर डारि करत कटाच्छ गति डोल झूल नथ के॥ पूतरी महावत बिराजे आड़ नासिका सों पीतम के प्यारे हैं लिवैया जग गथ के॥ मोहन के मोहन हैं सोहैं तीखे लरिबे को नैना तेरे दोऊ हाथी माते मनमथ के ॥१४९॥

जोबन प्रबाह तामें छबि की तरंगे उठैं भौंह की मरोरन सो भौंर मतवारे हैं। बालम की मूरति मलाह लाज बैठ रही छूटे लाल डोरे तेई गुन रतनारे हैं। पूतरी हलन तेई पतवारी अधीराम लाज बादबान चंपू

बरुनी सवारे हैं। रूप के सरोवर में तीर तीर डोलत हैं अखिया न होय ऐसी काम के नवारे हैं ॥ १५० ॥

कैधौं रूप सागर के रतन जुगल कैधौं भूप मीन के-तन के केतन सुजस के। नेह भरे सदन सदन के प्रदीप कैधौं रसराज चाखिवे को चखक सरस के ॥ सुनत सु-देस के सुवेस से महीप कैधौं बस कीने काज इन्दिरीन विसि दस के। लगे हिय ऐनक सकत दिन रैन कैधौं प्यारी तेरे नैनतीर मैन तरकस के ॥ १५१ ॥

ऐसे नैन मैन के न देखे ऐन सेन के जगैया दिनरैन के जितैया सौति सीन के। कमल कुलीनन के मुकुली करनहार कानन की कोरन लौं कोरन रंगीन के ॥ भ-नत कविन्द भावती के नैन पायक से देखे मैन पायक से नायक नवीन के। सौंचे हैं अमीन के असीन मानो मीन के बखाने को मृगीन के खगीन पखगीन के ॥ १५२ ॥

जबी सी रहति अरबिन्दन की आभा महबूबी मृग छौनन की छाम करियतु है। दूबी बन बीथिन चकोर चाहताई मन सूबी तुरगन की तमाम करियत है! डूबी जल जोरन सी मीन बरजोरी सौंभ औंर मगरूरी बदनाम करियत है। देखि देखि तेरी अंखियान की अजूबी प्यारी खूबी खंजरीटन की खाम करियतु है। १५३ ।

प्रेम रंगभरी जग भरी जागी जामिनी के जोबन की

जोति जगि जोर उमगत हैं। मदन के माते मतवारे ऐसे घूमत हैं झूमत झुकत झपि १ उघरत हैं। चाहत हैं उड़िबे को देखत मयंकमुख जानत हैं रैनि तातें ताही में रहत हैं । कहै कवि आलम निकाई इन नैनन की पांखुरी पदुम पै भवर थिरकत हैं ॥ १५४ ॥

सुखमा मलिन्द के पलिंग अरविन्द हैं कविन्द हैं न-रिन्द के लगी हैं वर जस के। श्रीपति प्रवीन रूपसर के ललित मीन हरिन नवीन नेह कानन सरस के ॥ एरी मेरी प्रानप्यारी लोचन तिहारे प्यारे सुरज सुधारे पिय विरह तमस के। रति रनवीर हैं सिंगार गुनधीर हैं सं-वारे पाके तीर हैं मदन तरकस के ॥ १५५ ॥

दोहा ।

अमी हलाहल मद भरे सेत स्याम रतनार ।
जियत मरत झुकि झुकि परत जिहि चितवत इक बार ।
कारे कजरारे अमल पानिप ढारे ऐन ।
मतवारे प्यारे चपल तुव ढुरवारे नैन ॥ १५७ ॥
तन सुबरन के कसत यों लसत पूतरी स्याम ।
मनो नगीना फटिक में जरी कसौटी काम ॥ १५७ ॥

अंजन वर्णन कवित्त ।

कैधों रस राजरस रचित अचित कैधों ललित बि-

सिख बिख बलित सुभाव के। कैधौं जग जीतिबे को राजा
रति नाथ हाथ बाहन बनाए केसोदास चल चाल के।
हत घात पातक कि चित्त चोरिबे को तम देखिबे को
मंदलाल लालि करै काल के। लागि रही लोक लाज
खंजन नयनि किधौं पियमन रंजन को अंजन हैं बालके॥

दोहा।

दृग द्वारा तकि ज्यौं लख्यो दीपक जातक भाय।
जग के घातक पायके लागत पातक धाय॥ १५९॥
रे मन रीति बिचित्र यह तिय नैनन की चेत।
बिष काजर निज खायके जिय औरन को लेत॥१६०॥
याते औरन ते लसत चख चंचल दृग भाय।
मनु बिधि पूजा करन में खंजन बांध्यो आय। १६१।

बरुनी वर्णन कवित्त।

छुवनहीं कोमल सिरिस की सी पांखुरी हैं खिन २ खरी खरकति जाती छाती हैं। निपट अन्यारी नेक छो·तिना छिये तें न्यारी अली नटमाल की अनीसी इठा·ती हैं। मंडल तिलौकी असि काजर करौंछी अति अंकुर सिंगार को जई सी लहलाती हैं। नैन मैन तीरन की फोकसी तरेरी तीखी तरुनी की बरुनी वे बरनी न जाती हैं। १६२।

नजर परीतें उसइत उर भानद है सबत समूह सो कटाच्छन सवेद है। कालिदास लोचन पियाले भव सो-भतहीं पीतम के भंग२ परसत सेद है। दोज हितकारी करि मोहत मुरारी जी को छकेई रहत लखे बिरति अ-खेद है। बरन में एक गुन भेद मानो तरुनी की बरुनी में बारुनी में और कछू भेद है। १६३।

कैधों दृग सागर के आस पास स्यामताई ताही के ये अंकुर उलहि दुति बाढ़े हैं। कैधों प्रेम क्यारी जुग ताकेये पहूंचा रची नील मनि मरनि की बारि दुखडाढ़े हैं। सूरति सुकवि तरुनी की बरुनी न होवे मेरे मन आवे ये विचार चित गाढ़े हैं। जोई जे निहारे मन तिन के पकरिवे को देखो इन नैनन हजार हाथ काढ़े हैं।

लिख्यो मन नायक बनाव रसराज मसी कैधों महा-मोहनी के मंत्र के बरन हैं। कैधों नैन चोरन के हाथ की अनूप असी कैधों स्याम रंगन के अंगन के कन हैं। कैधों ये पचास टूक सीवन को सार सुई कैधों कारे ता-रन के किरन के गन हैं। कैधों रूप पंकज के ऊपर ये पंकरेखें कैधों नैन तरुनी के बरुनी सघन हैं। १६५।

दोहा।

कारे अनियारे खरे कटकारे के भाव।
झपकारे बरुनी करत झप २ कारे घाव॥ १६६।

पलक वर्णन।

यों तारे तिय दृगन के सोहत पलकन साथ।
मनो मदन हिय सीस विधु धरे लाज के हाथ ॥ १६७ ॥

भृकुटी वर्णन कवित्त।

कैधों लागी पंकज के अंक पंक लीक किधौं केसव मयंक अंक अंकित सुभाय को। जंत्र है सोहाग को कि मंत्र अनुराग को कि मंत्रन को बीज अध उरध अभाय को। आसन सिंगार को कि काम को सरासन है सासन लिखो है प्रेम पूरन प्रभाय को। राख रुख वेख बिख बिषम पियूष में सुभामिनी की भौंहै किधौं भौन हायभाय को ॥ १६८ ॥

जे बिन पनच बिन करखी कसीस बिन चलत दुसारे यह जिनको प्रमान है। आंखिन उड़ता आय उर में करत घाय परत न देखी पीर करत अमान हैं। बंक अवलोकन की बानि औरई विधान कज्जल कलित जामें जहर समान हैं। तासों बरबस वेधें मेरे चित चंचल को प्यारी तेरी भौंहैं कैसी कहर कमान हैं ॥ १६९ ॥

सौरभ सुगंध स्वास चंपकली नासिका की कैधों अलि जरध तें पयन करत हैं। कैधों मुखचंद्र भयो वाहन कुरंग कांध जुवा मरकतन को मनहीं हरत हैं ॥ कैधों बल

भट्ट भाल कंचन के भाजन में द्वैम जुग नैनन को काजर परत हैं। भामिनी की भौहैं किधौं काम की कमान सी हैं जिन्हैं देखि सौतिन के प्रान निसरत हैं ॥ १७० ॥

कैंधौं रतिनायक की कुटिल कृपान कैधौं बिरह भुजंगम के अंकुस बिमल हैं। कैधौं बाल अलिन की अ-वली ललित लसै रंग रस भयो पिये आनन अमल है ॥ कैधौं नैन चातक पै जनी घटा अंबुद की लाल मन कू-लिवे को कैधौं कलबल हैं। कैधौं भौरी भामिनी की भृ-कुटी बिराजै बंक कैधौं ये सिंगार बेलिकी के दोऊ दल हैं ॥ १७१ ॥

अमल कमल पर गुंजत भँवर जुग प्रेम की तुलाकी सुभ डांडी जोहियत है। तनक मयंकअंक लोचन चपल रति जरध को अञ्जन की आड़ रहियत है ॥ कैधौं मनि कण्ठ हाव भाव के वकील ये हैं काम की कमान पिय मन मोहियत हैं। सोभा रस भासन सिंगार रस आसन की कैधौं मन भावती की भौंहे सोहियत हैं ॥ १७२ ॥

भाल वर्णन।

केसव असोक किधौं सुन्दर सिंगार लोक कमला के द्वार किधौं आनद के कंद को। सोभा को सुभाव किधौं प्रभा को प्रभाव देखि मोहे हरि राव सखि नन्दन सुनंद को ॥ चमकत चारु रवि गंगा को पुलन मानो चकचौंध

चित मति मंदह अमंद को । वेज है सोहाग की कि भाग की सभा सुभ.ग भामिनी को भाल किधौं भाग चारु चन्द को ॥ १७३ ॥

रूप की नदी में पार पाइवे को पारो है कि काम को अखारो है कि रति को भंडार है । लाज को महल प्यारे मंडन के आंखिन के पैठिवे को पैंड़ो है कि प्रेमरस सार है ॥ राहु जानि बारन के भारन डेरानो यातें चंद्रमा को मानो अध खंड अवतार है । जोवन को हार के नि-काई को निकार भोरी गोरी को लिलार कैधौं सोभा को सिंगार है ॥ १७४ ॥

वेनी भानु तखत के रूप को बखत यह संभु राज लखत भंडार काम माल को । आनद को कन्द कैधौं सरद को चन्द लसै दामिनी अमंद के किनारो सुधा ताल को ॥ मोहिवे को जंत्र कैधौं कामरू को मंत्र विधि रच्यो है स्वतंत्र मनहरन गोपाल को । अतिही बिसाल कैधौं जोतिन को जाल यह प्यारी तेरो भाल है हरैया लाल लाल को ॥ १७५ ॥

करत उचाट पाट मंत्रन को मंत्र मनो ललित लि-लाट तेरो हरत हियान है । कालिदास बिलसत सेंदुर को बिन्दु चारु सुन्दर गोबिन्द मन मोहन बिधान है ॥ सोने तें सलोने भाल अलक में सुन्दरी के जगमग दियो

लै तिलक छविधाम है। राहु पै चलायो है मयङ्क जमधर सो तो रहि गयो मेरे जान उर मैं मियान है ॥१७६॥

थापी कैधौं जस की जनमभूमि सलित उपजत जहां सब सुजन को आल है। तिलक तरोवर की छाया सु कलप तरु रस के अगारन को अजिर रसाल है। भाग के सो बासन सोहाग कैसो आसन है मोहनी को सासन कढ़्यो तैं यह लाल है। काम के तुरंगन की धाइ का बरनि यहै कैधौं बलभद्र भोरी भामिनी को भाल है॥१७७॥

भालबिन्दु वर्णन।

बपु बच्छ तें लगायो भयो गुरु बंधु जानि भुव सुत भेटे तकि उडुप नरिन्दु है। कैधौं रवि सारथी कुरंग रथ सारथी भो कैधौं निज नारी उर पर धरे इन्दु है। सौतिन को गर्व दहिबे को है दहन कन बलभद्र मवै सुख दैन दुख निन्दु है। राग पिय मन को पराग मुख पंकज को भामिनी के भाल कैधौं केसर को बिन्दु है॥ १७८॥

आज मुखचन्द पर राजत रुचिर बिन्दु सोई व्रजचन्द को बिकावन सिताब की। छाजति छबीली छबि बरनि न जाय मो पै हरनी हितूजन के हिय को हिताब की। रति की न रंभा की न सची उरबसी की न वारि २ डारियत उपमा किताब की। गालिब गुलाब की न पंकज के आब की रही न आफताब की न ताब माहताब की॥ १७९॥

सवैया ।

आज गई सिगरी मुंदरीं जी बड़ीं गूंथि मोतिन जोतिन जाल में । कंकन किंकिनि छाप छरा हरा हेम हमेल परी मति चाल में ॥ टोनो पढ्यो कछू बैनी प्रवीन सलोनो सरूप लखे किते बाल में। इन्दु जित्यो अरविन्द जित्यो तू गोविन्द जित्यो इक बिन्दु दै भाल में ॥ १८० ॥

बाल के भाल विसाल दये मृग के मद को लसै बिन्दु सलौना। लागि न जाय कुदीठ कहूं यह हेत दियो मनो नील डिठौना ॥ भावत है विजयानन्द जू अपने मन की बड़े लोतवा लोना । कंज से नैन खिले दुहूं देखि ये लालची बीच भयो अलि छौना ॥ १८१ ॥

सीतलादाग वर्णन—कवित्त ।

पूरन मयङ्क कैधों मेटिकै कलंक बैठो अंक में समेटि कै नखत बड़ भाग है। कैधों रंगरेज मैन बांधनू विचित्र बांध्यो कैधों रूप सागर में झलकत झाग है ॥ कैधों नये सोभा के बये हैं बीज रचि २ कंचन की भूमि पै जटित पुष्प राग है । नाथ अनुराग है कि फूल्यो मैन बाग है कि कीरति को सोहाग है कै सीतला को दाग है ॥१८२॥

साधि सुभ लगन मुहूरत अवधि साधि त्रिभुवन जीतबे को चक्र उपजाये हैं। कैधों पांत लाखन की लागी विधुमण्डल में मण्डल अखण्डल के तन मन भाये हैं।

जोबन दिनेश के उदै में खुल्यो कंज नाल तापै मानो ओप के कनूका बिथराये हैं । मोहन बसीकर के जंत्र लिखि राखे कैधौं दाग सीतला के मुख ऊपर सोहाये हैं ॥ १८३ ॥

कंचन बदन तेरो लागि दाग सीतला के कैधौं जैन जड़िया ने चुनी जरि धरी हैं । कोमल कपोल कैधौं स्रम के पसीजे भीजे आनद कनक कैधौं छबि छीटैं परी हैं ॥ वारि डारौं रति बलिहारि डारौं रति पति मुख की घटा तें मानो प्रेम बुन्दैं झरी हैं । छोटी छोटी मोटी तेरे मुख पै सुघर प्यारी मानो लखा लाखन नखत जोति छरी हैं ॥ १८४ ॥

भाग भरे आनन अनूप दाग सीतला के देव अनुराग भिभिया से झमकत हैं । नजर निगोड़िन की गड़ि गड़ि गाड़े परे आड़े करि पैन दीठ लोभ लपकत हैं ॥ जोबन किसान मुख खेत रूप बीज बोयो बीज भरे कुन्दन अमोल दमकत हैं । बदन के बेझे पै मदन कमनैती के चोटारे सर चोटन घटा से चमकत हैं ॥ १८५ ॥

केश वर्णन ।

कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारु चितये तें चित चकचौंधियत केसोदास । सुनहु छबीली राधा छूटे तें छुवैं छबान कारे सटकारे हैं सुभाव ही सदा सुबास ;

सवैया ।

आज गईं सिगरी सुंदरैं जे रहीं गूंथि मोतिन जो-तिन जाल में । कंकन किंकिनि छाप छरा छरा हेम हमेल परे मति चाल में ॥ टोनो पढ्यो कछु बैनी प्रवीन सलोनो सरूप लखे किते बाल में । इन्दु जित्यो अरविन्द जित्यो तू गोविन्द जित्यो इक बिन्दु दै भाल में ॥ १८० ॥

बाल के भाल विसाल दयो मृग के मद को लसै बिन्दु सलोना । लागि न जाय कुदीठ कहूं यह हेत दियो मनो नील दिठौना ॥ भावत है विजयानन्द जू अपने मन की यह होतबा होना । कंज से नैन खिले दुहूं देखि ये लालची बीच भयो अलि छौना ॥ १८१ ॥

सीतलादाग वर्णन—कवित्त ।

पूरन मयङ्क कैधौं मेटिकै कलंक बैठो अंक में समेटि के नखत बड़ भाग है । कैधौं रंगरेज मैन बांधनू विचित्र बांध्यो कैधौं रूप सागर में झलकत झाग है ॥ कैधौं नये सीमा के बये हैं बीज रचि २ कंचन की भूमि पै जटित पुष्प राग है । नाथ अनुराग है कि फूल्यो मैन बाग है कि सौति को सोहाग है के सीतला को दाग है ॥१८२॥

साधि सुभ लगन मुहूरत अवधि साधि त्रिभुवन जी-तबे को चक्र उपजाये हैं । कैधौं पांत लालन की लागी विधुमण्डल में मण्डल मखमण्डल बे तन मन भाये हैं ।

जोबन दिनेश के उदै में मुक्यो कंज नाथ तापै मानो ओम के कनूका बिथराये हैं । मोहन बसीकर कै जंत्र लिखि राखे कैधौं राग सीतला कै सुख ऊपर सोहाये हैं । १८३ ॥

कंचन बदन तेरो लागे दाग सीतला के कैधौं रैन जटिया ने चूनी जरि धरी हैं । कोमल कपोल कैधौं स्रम के पसीजे भीजे आनद कनक कैधौं छबि छोटें परी हैं ॥ वारि डारौं रति बलिहारि डारौं रति पति मुख की घटा तें मानो प्रेम बुन्दें करी हैं । छोटी छोटी मोटी तेरे मुख पै सुघर प्यारी मानो लता लाखन नखत जोति हरी हैं ॥ १८४ ॥

भाग भरे आनन अनूप दाग सीतला के रैव अनुराग भिभिया मे झमकत हैं । नजर निगोडिन की गडि गडि गाडे परे आडे करि पैन दीठ लोभ लपकत हैं ॥ जोबन किसान मुख खेत रूप बीज बोयो बीज भरे सुन्दर कपोल दमकत हैं । बदन के बेझे पै मदन कमनैती के चोटारे सर चोटन घटा मे चमकत हैं ॥ १८५ ॥

केश बर्णन ।

कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारु चितये तें चित चकचौंधियत केसोदास । सुनहु छबीली राधा छूटे तें छुवैं छबान कारे सटकारे हैं सुभाव ही सदा सुबास ;

सुनि के प्रकास उपहास निसि वासर को कीनो है सुके-सव सुवास जाय के अकास । यद्यपि अनेक चन्द्र साज मोरपच्छ तज जीत्यो एक चन्द्रमुख रूप तेरे केस पास ॥

कालिन्दी की धार निरधार है अधर मन अलि के धरत या निकाई के नरेस हैं । जीते अहिराज खंडि डारे हैं सिखंड घन इन्द्र नील किरिन कराई ना हमेस हैं । एडिन लगत सेना हिय को हरख बरैं देखत हरत रवि कन्त को कलेस हैं । चीकने सघन अँधियारे तें अधिक कारे लसत लछारे सटकारे तेरे केस हैं । १८७ ।

कोमल कुटिल नीलमनि के सिखर चल बिमल बि-साल बाल चीकने न सरि के । सुन्दर उदार कच नूपुर तें आय लागैं उतर सघन मानो सुखमा सुभरि के । जो-हन के काज लागे गोहन गोपाल डोलै सोहन दिनेस मन मोहन हैं हरि के । भौंरन के हार मखतूल कैसे तार देखे होत निसतार छूटे बार ये कुंवरि के ॥ १८८ ॥

कारे सटकारे फटकारे चटकारे नेक धूप दै संवारे सुखमा समूह बसि गो । कोकिला कुहको सोहक को कियो मैलो मन कासीराम भौंरन को भाव नीको नसि गो । सावन के घन बन सघन तमाल तरु तरनि तनूजा ताहि हेरि हिये हंसि गो । तेरे तन रूप की तरंगिनी नहनि मन पैर बार पारन सेवारन में फंसि गो ॥१८९।

ओवन सरोवर के कोमल सेवार मूल काम तन्तु तूल मखतूल कैसे तार हैं। पंच सर सिंधुर के स्याह चौंर भौंर कैधों कैधों सीस सहज सिंगार रस सार है। माथे मार मरकत मनि की मयूखें कैधों कैधों धरे चन्द को तिमिर पर वार हैं। जामें २ जामें जोत लता के बितान कैधों कैधों स्याम बरन छबीली छूटे बार हैं॥ १६०॥

लामे लहकारे लटकारे सुकुमारे कारे मृगमद धारे मखतूल के से तार हैं। तमके निवास कैधों तामस प्रकास के सिंगार के सरोवर में सुथरे सेवार हैं॥ मार सिर मौर के सुबारक ये भौंर कैधों चातुरी के चौंर मन में चक्र के सार हैं। ससि के समीप कैधों राहु की रसन सी है नागिन के बार के सोहागिन के बार हैं॥ १६१॥

लट वर्णन।

देखे मुख चन्द दुति मन्द सी लगति चित लोचन बिलोके मृगसावक सरफ है। सोने कैसे पात गात देखत लजात जात मेनका न कही जात रूपज तरफ है॥ मोती मोर बेसर को लसे लाल ओठन पै जैसे मनि बिम्ब ढिग बुन्दन बरफ है। नेह भीनी लट वाकी लपटी कपोलन पै मानो मैन पारसी में फारसी हरफ है॥ १६२॥

निकसी कलंकित कलंक रेख छीन ह्वै के बदन ससी में हग देखे भटकत है। कैधों पक्षि बाल पांति पक्षि

बकी कंज ढिग अधर अमीको नागिनी सी छटकत है। पति मिलिबे को भुज जामिनी पसाखो एक सौति चित चाह की चटक चटकत है। मैन नट नागर लकुट मनि कंठ कैधों कारी सटकारी प्यारी लट लटकत है ॥१८१॥

छोटी २ जुलफैं है ओरन मरोर राखी कैधों मुख कंज में मधुप अरुझाने हैं। कैधों चन्द मण्डल पै पीवन पियूख आए नागिनि के छौना मृगमद लपटाने हैं॥ कैधों काम कुंजर के अंकुस सुभग बने भूमि के धरे हैं रतिराज पहिचाने हैं। कैधों सिसु स्याम के सिपाही दोऊ ऐन खूनी खैंच २ खंजर ये कौन पै खिसाने हैं॥

दृग मीन बाझिबे को बंसी यह सखी कैधों नागिनि की बच्ची पीवै अमृत अमन्द है। प्रेम के कपाट खोलिबे को आंकुसी है कैधों कैधों ये प्रसाद मन फासिबे को फन्द है। रूप के जहाज बीच लंगर लग्यो है कैधों मोहनी महल पर लसत कमन्द है। चन्द की चटक पै सुराहु की सटक परी सटकि रही हैं लट माधव पसन्द है॥

पाटी वर्णन।

कैधों बेनी पन्नगी के फन दुहूं ओर कैधों मन दृग रोकिबे को रूप भूप घाटी है। मुख बिधु तान के बितान जुग मेरे जान कमल के ऊपर सेवारन की टाटी है। कैधों करतल रसराज राखे माथे दोऊ दीपत दि-

भैस तातें ललित लिलाटी है । एरी आगे मोहन मयूर से निरखि नाचें सघन के घन पटली की परिपाटी है। रातें सेत फूलन की उलही ललित पांति कैधौं चारु जोबन महीपति की बांटी है । कालिदास आस पास बिलसै सलोनी स्याम कैधौं काम कुटिल बहेलिया की टाटी है। एरी मृगनैनी हरि मन अटकायबे को कैधौं पाट पूरी बेनी घाटनी की घाटी है । प्रेम रस पाटी सोहै प्यारी तेरी पाटी कैधौं चारु वर मंत्र बीज बोयबे की बाटी है ॥ १८७ ॥

कैधौं रसनायक बिहंगम के जुग पच्छ कैधौं प्रतिपच्छ सौति जन के समोद के। कैधौं तम पूरि है कलाधर तें छप्यो आय कैधौं बिप्र बालक दिवाकर के गोद के ॥ परसराम कैधौं स्याम वेद के अनूप खंड कैधौं काम भट के खेलौना मन मोद के । पाटी के बिभाग सोहै पिय के अटल भाग नीर भरे मानो चारु पटल पयोद के।

दरस दरस को परस होत बलिभद्र कैधौं है सरस सलासन सुर भान की । रसराज पच्छी जैसे उभै खंड कैसे सोहै ढाकि बैठो क्षपाकर मैचक बितान की। तम के पटल लपटाने हैं मुकुट सौं कि सरस कदंबिनी कसौटी पंच बान की । पाटी तेरी तरुनी जुगल ऐसी राजै मानो जामी जुग जमुना सिखा रतन सान की ॥१८८॥

मांग वर्णन ।

पहिलेही ललना नवेली अलबेली रची रचना सि-
मन्त की सहेलिन को संग है । कालिदास कैसी पाटी
पाटत बनी है घनी अलकें अनूप बनी बन्दन को रंग
है । देखि मन सुन्दर गोबिन्द को मगन भयो कैसी बनि
आई मन मोहनी की मंग है । ले चल्यो दुसाखा सुनि
दीपक जगायवे को जोबन महीपति के आगे ह्वै अनंग
है ॥ २०० ॥

तम के विपिन में सरल पंथ मल्लिक को कैधौं नील-
गिरि पर गंगा जू की धार है । कैधौं बनवारी बीच रा-
जत रजत रेख कैधौं चन्द कीनो अन्धकार को प्रहार है ।
नायति सिंगार भूमि छोरी हासरस कैधौं बलभद्र की-
रति की लीक सुकुमार है । पय की है सार घनसार की
असार मांग अमृत की आपगा उपाई करतार है ।२०१।

दोहा ।

लाल मांग पटिया नहीं मदन जगत को मार ।
असित फरी पै ले धरी रकत भरी तरवार ॥ २०२ ॥

बेणी वर्णन—कवित्त ।

पीठ तन ताकतही दीठ तन हस रोती फेल के बिरह
बिल रोम २ धावती । छिनक में केतिन के केतो उतपात
होतो एतो कोऊ गारुड़ी कहा तें ढूंढ़ि ल्यावतो ॥ ईश्वर

दोहाई जो पै होती ऐसी ब्याली तो पै कारी को गवैया कान्ह कैधे कै कहावतो । मृदु मुसकान मंत्र जानती न राधे तो पै बेनी के डसन हल बसन न पावतो ॥ २०३ ॥

छांवी छहकारी अति कारी सुकुमारी सखियान ने सुधारी मत्त मधुप की सेनी है । डारत कलंकहि कला-निधि निचोरि कैधों कैधों मन धीरज बिदारिबे की छेनी है । नागरि सनाल मुखकंज तें लगी है कैधों कैधों कारी नागिनी निपट सुख देनी है । कीनो तम पान कै लक्ष्मी-पति के पाछे परी कैधों अंधकार धार कैधों यह बेनी है ॥ २०४ ॥

कंचन की सांटी पर काजर की धार मानो रूपमाल पर अलि माल लटकत है । श्रीपति भनत कैधों केसर के खंभ पै सदंभ एक मरकत लरी चटकत है । कैधों रति नायक के पाट पै सिंगार लीक देखि कवितान की सुमति झटकत है । कारी सटकारी बेनी पीठ पै लसत कैधों रंगी रंग पाटी पै भुजंगी सटकत है ॥ २०५ ॥

बेनी नव बाल की बनाय गुही बलभद्र कुसुम बसन पाट मन मोहियत है । कारी सटकारी नीकी राजति नितंब नीचे पन्नग की नारिन को देह दोहियत है । सात्विक सिताई अरुनताई तेज तामस की राज सरताई मिलि रूप रोहियत है । धरत तिगुन वपु त्रिभुवन जीतबे को मानो महा माया को सरीर सोहियत है ॥ २०६ ॥

स्यामी सटकारी बहु पेचन की भारी धौं गरक रीझि सारी न्यारी अतिसय झौंक की। बरनौं कहाँ लौं ओप मदन की धोप कैधौं इन्द्र करि कोप तररानी एक धोक की। नटुवा की आंटी कैधौं आसन सधापने को कहा लौं बखानौं हौं पढ्यो न विधि कोक की। नागिन के तिमिर कपाकार में छाय रही कटि पर बेनी कै निसेनी सुरलोक की॥ २०७।

रैन की उनींदी राधे सोवति सकारे भये झीनो पट तानि परी पायन लौं मुख तें। सीस तें उलट बेनी कंठ ह्वैके उर ह्वैके जानु ह्वै कवान छ्वै के लागी सुधे रुख तें। सुरति समर रति जोबन के महा जोर जीति भगवन्त अरसाव राखौ सुख तें। हर को हराय मानो माल मधु करन की राखी है उतारि मैन चंपा के धनुख तें॥१०८॥

जूरा वर्णन।

अचरज कला कलाधर धरि राखी पीछे कैधौं सुर-भानजा निकर बैर कांध्यो है। कैधौं अहिकारे सटकारे तें लहरदार सुधाकर जानि के नवीन नेह नाध्यो है॥ कैधौं कंज कोस ढिग अलि पुंज गुंजत हैं मंजुल मनोज मग जानि सर साध्यो है। चीकने चिकुर चारु चह चहे जूरो स्याम ऐंठ गैंठ लटनि लपेट मन बांध्यो है।२०९।

कैधौं सांप पीढ़ुरी है फन उकसाय बैठो कैधौं काम आंकुस सँवारिवे को पूरा है । कंचन की गुटिका सौं पाटी पारिवे को राख्यो कैधौं सालगाम को सरूप रूप सूरा है । कैधौं सती करत तपस्या तीर कालिन्दी के हृन्दा कैसो फल देखियत मन रूरा है । चीकने चटक मटकत कारे स्यामहू तें ऐसो सीस प्यारी के बिराजमान जूरा है ॥ २१० ॥

सीस फूल वर्णन ।

अगर मगर छोत जमुना को जल कैधौं कोकनद कमनीय पूरन प्रभनि को । सुकवि रतन कैधौं राजत रतन बर कारी कुण्डलीस फनि ऊपर फवनि को । कैधौं सुरभान परभान भोरही को कैधौं उयो भौमतर है तनूभव तरनि को । कैधौं प्रान प्यारी की सँवारी पारी पाटिन में सोहत सुभग सीस फूल लाल मनि को ॥ २११ ॥

अंग २ भूखन जराव के जगमगात चौकी चमकत छवि छाजै भाल गंड की । सारी जरतारी की किनारी सुकुमारि की है पसरी किरिन रवि राजत प्रचंड की ॥ भाल के तखत बैठ्यो सोहत सोहाग ताको छत्र है छबीली छटा लागै दुति दंड की । सीस फूल सीस देखिराजत दिनेस कैधौं सघन घन ऊपर उदै है मारतंड की ॥२१२॥

सर्वाङ्ग वर्णन ।

चन्द कैसो भाग भाल भृगुटी कमान ऐसी मैन कैसे पैने सर नैननि बिलास है । नासिका सरोज गंध बाह से सुगंध बाह दारयो से दसन कैसो बीजुरी सो हास है । भाई ऐसो ग्रीवा भुज पान से उदर अरु पंकज से पाय गति हंस कैसे जास है। देखी है गोपाल एक गोपिका मैं देवता सी सोने सो सरीर सब सौंधे कीसी बास है॥२१३॥

कंज से चरन देवगढ़ी से गुलुफ सुभ कदली से जंघ कटि सिंह पहुंचत है। नाभी हैं गंभीर व्याल रोमावली कुंभ कुच भुज ग्रीव भाप कैसी ठोढ़ी बिलसत है॥ मुख-चन्द बिम्बाधर चौका चारु सुक नाक खंज मीन नैनन बंकाई चपिकत है। भाल चाधो विधु भाग करन अमृत कूप बेनी पिकबैनी जू की भूमि परसत है॥ २१४॥

अहिन खिलावत हैं मृगन लरावत हैं सुकन पढ़ावत हैं नेक ना टरत हैं। कबहू कै संख पूरि संभु जू की सेवा करैं कबहूं के कुंड बूड़ि सिंहन धरत हैं॥ कबहूं के कदली के खंभ सो लपेटि जंघ कबहूं के कंज माथे राखि बहरत हैं। जा दिन तें न्हात चार आंख भई ता दिन तें भावरो सो भांति २ भावना करत है॥ २१५॥

भूखन जराइन के पायन चनौट चोट कंचन अनूप रूप बांचेही की डारी सी। घुघरू पायल पर जेहर बि-

राजे चौर छाजै छुद्र घंटिका विहारि मति हारी सी। कंठ कंठमाल माथे बेंदी लाल लाल की है भाल की दिनेस दुति देखे लगी तारी सी। मनिमय धारी नख-सिख उजियारी निसिचारी नील सारी जगमगति दिवारी सी ॥ २१६ ॥

दोहा।

मुख छवि निरखि चकोर अरु तन पानिय लखि मीन।
पद पंकज देखत भँवर होत नयन रस लीन ॥ २१७ ॥

अंग सुगंध वर्णन—कवित्त।

कमल बदन कर नयन चरण कुच पूरण कुरंग मद दृगनि बिलास है। भृगुटी कुटिल कच मेचक सुगंध मई कुंद कलिका से दंत चंदन सो हास है ॥ कुंकुम सरीर कुमकुमा नीको स्वेद नीर अम्बर को केसोदास अम्बर बिकास है। मन के रचन विधि कैधौं इष्ट देवता अदृष्ट गति दूतिका कि सहज सुबास है ॥ २१८ ॥

फूले है न सरद सरोज इहि समै कहूं फूले है न फूल कैसी सौरभ कहाते हौ। चंपक थलीन मिली मालतीन अवलीन केसर परसि पौन आयो ना तहांते हौ ॥ चोखो है न घनसार चोखो न कुरंगसार सौरभ अपार पारावार को जहां ते हौ। कहम रसिक हम जानी लपटानी रानी आई रंगमहल तें मिलन जहां ते हौ ॥ २१९ ॥

जमुना के पावन आरस में आहतन जीवन की भीर छिपटे ये छवि पावे है। संतन सुकवि सुख खानि पहिलनि लिर रूप के तरंगनि पतंग हरसावे हैं। बाहर कढ़न कहै तोसो है पयानी कौन लैहै पद्नामी घेर घर २ छावे है। पटकी लपट लपटति ता हिमा तें पाज मानो छन नखिन गुलाब छिरकावे हैं। २१० ।

सुकुमारता वर्णन ।

कंज दल पांवड़े पै कसकि धरति पाव जो पै कहीं लागो जात भाग पंगनाई को । ताहि तुम कहत सु कौन लाई कुंजन में घरही में माने डर भौंर की भवाई को। और गुन कढ़ि कहां लौं कहौं लाल वाके वारने भयो है हिया मान की मोराई को। जहां २ मंजुल बदन विकसात वाको तहां २ जान्यो जात जनम जुन्हाई को ।

सोरह शृङ्गार वर्णन ।

मोतिन सो भरी माग सीस फूल टीको हिये बेसर तरौना छबि सारी जरतारी की। मोतिन को हार माल फूल के चमेल हेम कंकन जराव छबि पारसी निहारी की। भरमी सुकवि कटि किंकिनी रसाल बाजै जेहर को पायलेह सोभा सुखकारी की। बिछिया चमोट राजै षोड़स सिंगार साजै मोह्यो मन मोहन को देखि दुति प्यारी की । २११ ।

बिछिया अनौट बांके घुंघुरू जराय जरी जेहरि छबीली छुद्र घंटिका की जालिका। मूँदरी उदार पौंची कंकन और चूरी चारु कंठ कठमाल हार पहिरे गोपालिका॥ बेनी फूल सीस फूल मांग फूल कर्नफूल खुटिला तिलक नीको मोती सोहै बालिका। केसोदास नील बास जोति जगमगि रही देह धरे स्याम संग मानो दीपमालिका॥ २२३॥

कैधौं यह केसव सिंगार को है सिद्धि किधौं भाग की सहेली कै सोहाग को सुहाव है। लाल २ भांतिन के पीतिही को अभिलाख पहिरे बनाय किधौं सोभा को सुभाव है॥ जोबन की छाया किधौं माया मन मोहिबे की माया किधौं लाज की कि लाज ही को भाव है। सारी जरकसी जगमगात सरीर कैधौं भूखन जगावही की जोति को जराव है॥ २२४॥

दोहा।

संग्रह कियो अजान यह, रस ग्रंथन लै सार।
छमिहौ चूक सुजान पुनि, करिहौ लै परचार॥ २२५॥
संवत् जुग जुग अंक महि फागुन आनन्दकन्द।
यह मनोज की मंजरी बिकसी हेत मलिन्द॥ २२६॥

इति श्री मनोजमंजर्य्याश्चतुर्थ कलिका समाप्ता।